Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 41 अंक-19
कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 02 अगस्त से 08 अगस्त 2017 तक
श्रावण शुक्ल दशमी से भाद्रपद कृष्ण एकम् सम्वत् 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

मुआवजे बांटने मात्र... पृष्ठ- 3

जब आये हिचकी.. पृष्ठ- 4

रक्षा बन्धन प्रेम और.. पृष्ठ- 5

हिन्दू अस्तित्व, संकट... पृष्ठ- 8

सफाई तो चाहिए.... पृष्ठ- 12

● चीन को पीछे हटना ही पड़ेगा
● विडम्बना आस्ट्रेलिया में हिन्दी भारत में अंग्रेजी
● उच्च शिक्षा में भ्रष्टाचार
● महर्षि दयानन्द व सत्यार्थ प्रकाश का आज भी तिरस्कार केन्द्र पाठ्यक्रमों की अक्षम्य भूल
● धार्मिक आस्था पर आघात की घृणित राजनीति
● केरल में क्यों जरूरी है वैदिक शंखनाद?

स्कूलों में फंसे ६० बच्चे बचाए गए, पाक फायरिंग की वजह से फंसे थे

पाकिस्तान को करारा जवाब मिलें–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

जम्मू एवं कश्मीर के नौशेरा सेक्टर में पाकिस्तान की ओर से हो रही गोलाबारी व गोलीबारी के दौरान दो स्कूलों में फंसे ६० विद्यार्थियों को सुरक्षित निकाल लिया गया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। पुलिस प्रवक्ता ने कहा कि नौशेरा सेक्टर के भवानी इलाके में स्थित कडाली प्राथमिक स्कूल के अंदर फंसे ११ विद्यार्थियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। प्रवक्ता ने कहा सेना और पुलिस द्वारा इन ११ छात्रों को निकालने के शेष पृष्ठ 10 पर

देशद्रोही याकूब मेमन का समर्थन करने वाले गोपाल कृष्ण गांधी को मत न देने का आह्वान

● संवाददाता ●

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव श्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री श्री वीरेश त्यागी ने भारतीय सांसदों को लिखे खुला पत्र के द्वारा आहवान किया है कि १९९३ में देश की आर्थिक राजधानी मुंबई को दहलाने वाले, सैकड़ों निर्दोष लोगों की जान लेने वाले एवं सैकड़ों लोगों को घायल करने वाले देशद्रोही याकूब मेमन का समर्थन करने वाले पश्चिम बंगाल के पूर्व राज्यपाल गोपाल कृष्ण गांधी को उपराष्ट्रपति के चुनाव में अपना बहुमूल्य मत न दें। गोपाल कृष्ण गांधी ने याकूब मेमन को फांसी से बचाने के लिये मुहिम चलायी थी। उन्होंने पत्र लिखकर याकूब मेमन की फांसी की सजा माफ करने की अपील की थी। जबकि उन्हें अच्छी तरह से ज्ञात था कि १९९३ में मुंबई को दहलाने में याकूब मेमन की मुख्य भूमिका थी। हिन्दू महासभा नेताओं ने देश के सभी लोकसभा सदस्यों एवं राज्यसभा सदस्यों से खुला पत्र लिखकर अपील की है कि आप लोग देश की १२५ करोड़ जनता के प्रतिनिधि हैं तथा देश में लोकतंत्र के रक्षक हैं। आपका कर्तव्य है कि एक देश द्रोही व आतंकी सरगना को बचाने वाले व उससे हमदर्दी रखने वाले को उपराष्ट्रपति जैसे महत्वपूर्ण व गारिमामयी पद पर आसीन होने से रोकें। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय नेताओं ने कहा है कि बड़े आश्चर्य की बात है कि जहां एक तरफ बड़े गांधी मोहनदास करमचन्द शेष पृष्ठ 11 पर

भारतीय सांसदों को खुला पत्र

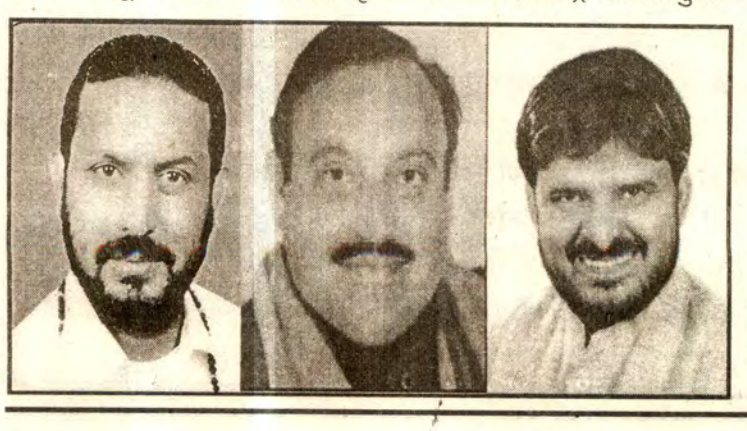

महामृत्युञ्जय मन्त्र

हर हार को जीत में बदल देने वाला शक्ति मन्त्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनूम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

- हे महा शिव! इस घनघोर अँधेरे में मैं तेरा आहवान करता हूँ।
- मृत्यु से भरे संसार में जीवन पुष्प खिलाने वाले!
- मेरी रग रग में जीवन शक्ति बन कर दौड़ने वाले!
- तू नेत्र खोलता है तो मैं देखता हूँ।
- तू चलाता है तो मैं चलता हूँ।
- तू संसार में भेजता है तो जीवन पुष्प समान खिलता हूँ।
- तू संसार से बुला लेता है तो तेरी गोद में चढ़ कर खेलता हूँ।
- तू ही है विस्फोट से सृजन करने वाला।
- तू ही है सृजन से धारण करने वाला।
- तू ही तो है धारण से संहार करने वाला।
- तू ही है संहार से विस्फोट करने वाला।
- मेरी दृष्टि में प्रकाश करने वाला।
- उस प्रकाश से सृष्टि को चमकाने वाला।
- सब देव, सब राक्षस, सब नर, सब नारी, सब जीव, सब जंतु तुझ में ही समा जाते हैं।
- आज के राक्षस कल ढेर हो जाते हैं। कल के ढेर परसों देव हो जाते हैं।
- आज का जीवन कल मृत्यु बन जाता है।
- आज का विग्रह फिर जीवन हो जाता है।
- आज का रोग कल निदान हो जाता है।
- आज का बंध कल मोक्ष हो जाता है।

तो हे महाकाल! तीनों जगत के स्वामी! तीनों काल के रचयिता, धाता और संहर्ता! मैं तेरा अमृत पुत्र तेरा आहवान करता हूँ! अपनी शक्ति, अपनी दुर्बलता, अपनी श्रेष्ठता, अपनी नीचता, अपनी जीत, अपनी हार, अपने जीवन और अपनी मृत्यु आज से तेरे चरणों में रखता हूँ। ना जीवन का मोह रखता हूँ, ना मृत्यु का भय रखता हूँ। जीवन होगा तो तेरे हाथ में, मरण होगा तो तेरे हाथ में। बंधन होगा तो तेरे हाथ में। मोक्ष होगा तो तेरी गोद में। लोग तुझमें मोक्ष ढूंढते हैं, मैं बंधन भी तेरे नाम करता हूँ।

लिख नहीं पाता

लिखने को जब भी कलम उठाता हूँ।
खुद को बिन लफ्जों के पाता हूँ।।

दौड़ते रहते हैं सोच के घोड़े फिर,
उनको मैं फिर ना थाम पाता हूँ।

अकसर खयालों में लिखता रहता हूँ,
पर लिखूं तो लिख न पाता हूँ।
खयालों में तो लफ्ज ही लफ्ज हैं,
पर कागज पर न ला पाता हूँ।

बन जाती है कविता मन में ही,
देख देख कर खुद मुस्कराता हूँ।

ना जाने ये कैसा रोग है मुझे,
जो लिखने पर सब भूल जाता हूँ।

हरदीप बिरदी

साप्ताहिक राशिफल

मेष : यह सप्ताह आपके लिए मिला–जुला फल देने वाला प्रतीत होगा। पिता के विरूद्ध कार्य करने में परिवार में तनावपूर्ण माहौल रहेगा। सन्तान की ओर से मन प्रसन्नचित्त रहेगा। व्यापारी वर्ग को दूर की यात्राओं से लाभ होगा। स्वास्थ्य के मामलें में अनुकूल समय है।

वृष : इस सप्ताह नौकरी पेशा वाले अपने निवास स्थान को लेकर सचेत रहें अन्यथा अनिद्रा के शिकार हो सकते हैं। आमदनी में इस समय वृद्धि तो होगी ही साथ में खर्च के स्रोत भी बढेगे। जो लोग लम्बे समय से स्वास्थ्य समस्या से ग्रस्त हैं उनको लाभ मिलेगा।

मिथुन : इस सप्ताह कुछ लोगों का ज्वैलरी या वाहन पर धन खर्च होगा। धन आयेगा लेकिन श्रम अधिक करना पड़ेगा। जो लोग शुगर से पीड़ित है वो सावधानी रहें। सरकारी तंत्र से सावधानी बरतें। परिवारिक सुखों के लिए यह समय श्रेष्ठ साबित होगा।

कर्क : इस सप्ताह कुछ लोगों के दाम्पतय जीवन में प्रेम बढ़ेगा। रिश्तेदारों से इस समय दूरी ही बनाये रखना आपके लिए लाभदायक होगा। यह समय आपके के लिए उन्नति कारक ही सिद्ध होगा। इस समय आप जमीन जायदाद की खरीदारी कर सकते है।

सिंह : इस सप्ताह कुछ लोगों को सावधान रहने की जरूरत है अन्यथा बेवजह तनाव ग्रस्त रहना पड़ सकता है। जो कार्य आप दूसरों के भरोसे छोड़ रखे है। उनमें विलम्ब की सम्भावना है। पारिवरिक सम्बन्धों में तनाव बना रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या : इस सप्ताह खर्च अधिक रहेगा। आलस्य सतायेगा फिर भी कार्य करना पड़ेगा जिससे मन अप्रसन्न रहेगा। अपने स्वास्थ्य के प्रति विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पति पत्नी में तनाव की स्थिति रहेगी। नयें सम्बन्धों में सावधानी बरतें।

तुला : इस सप्ताह आपके बहुत दिनों से रूके कार्य जिन पर आपका ध्यान नहीं जा रहा था वो कार्य फिर से शुरू होगे और आपको सफलता भी मिलेगी। बातचीत करने में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। प्राइवेट जॉब वाले लोगों को बोनस व अतिरिक्त लाभ मिलने के संकेत नजर आ रहें।

वृश्चिक : आपके उत्साह में वृद्धि होगी और कुछ कर गुजरने की योग्यता का प्रर्दशन करेगें। आमदनी की उतनी बढ़ोत्तरी नहीं होगी। जितनी आप अपेक्षा करेंगे। किसी महिला के कारण खर्च बढ़ेगा। आपके परिवार में अचानक मतभेद उत्पन्न होगे।

धनु : यह सप्ताह आय में वृद्धि करायेगा। परिवार की दृष्टि से यह समय अच्छा है। किसी अधिकारी के सहयोग से पुराना कार्य पूर्ण होगा। कार्य व्यापार में वृद्धि व लगभग सभी तरह के कार्यो में सफलता प्राप्त होगी परन्तु भविष्य की योजनाएं बहुत सूझबूझ कर बनाएं।

मकर : इस सप्ताह कुछ लोगों को मानसिक तनाव रह सकता है। मित्रों व रिश्तेदारों से सम्बन्धों में मधुरता रखें। नयी कार्य योजनाओं को शीघ्र ही प्रारम्भ करें। रोजगार के नये अवसर प्राप्त होगे। आय में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य की दृष्टि से समय अनुकूल नहीं है।

कुम्भ : इस सप्ताह प्रारम्भ में अत्यधिक खर्च होगा जिससे मन थोड़ा सा विचलित होगा। कुछ लोगों को मांसपेशियों से सम्बन्धित शिकायत रहेगी। पिता के विरूद्ध कार्य करने में परिवार में तनावपूर्ण माहौल रहेगा। सन्तान को कष्ट हो सकता है, परन्तु अचानक कुछ धन लाभ हो सकता है।

मीन : इस सप्ताह कुछ लोगों को करियर में बोनस की प्राप्ति हो सकती है। उत्साह में वृद्धि होगी जिससे कार्य करने में मन लगेगा। धार्मिक आडम्बरों से बचें। अपनी वाणी पर नियन्त्रण पर रखें। कुछ लोगों के स्वभाव में इस समय चिडचिड़ा पन पैदा हो।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो-लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः।।

श्री भगवान् बोले– मैं लोकों का नाश करने वाला बढ़ा हुआ महाकाल हूँ। इस समय इन लोकों को नष्ट करने के लिए प्रवृत्त हुआ हूँ। इसलिये जो प्रतिपक्षियों की सेना में स्थित योद्धा लोग हैं, वे सब तेरे बिना भी नहीं रहेंगे अर्थात् तेरे युद्ध न करने पर भी इन सबका नाश हो जायेगा।।३२।।

तस्मात्त्वमुत्ष्ठि यशो लभस्व जित्वा शत्रून्भुड्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।।

अतएव तू उठ् ! यश प्राप्त कर शत्रुओं को जीतकर धन–धान्य से सम्पन्न राज्य को भोग। ये सब शूरवीर पहले से ही मेरे द्वारा मारे हुए हैं। हे सव्यसाचिन् ! तू तो केवल निमित्तमात्र बन जा।।३३।।

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्।
मया हतांस्तवं जहि मा व्यथिष्ठायुध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्।।

द्रोणाचार्य और भीष्मपितामह तथा जयद्रथ और कर्ण तथा और भी बहुत–से मेरे द्वारा मारे हुए शूरवीर योद्धाओं को तू मार। भय मत कर। निःसन्देह तू युद्ध में वैरियों को जीतेगा। इसीलिये युद्ध कर।।३४।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 02 अगस्त से 08 अगस्त 2017 तक

अध्यक्षीय

मुआवजा बांटने मात्र से पूरी नहीं होती जिम्मेदारी

अमरनाथ यात्रा हमेशा से जोखिम भरी रही है, लेकिन अपनी श्रद्धा, भक्ति और साहस के बूते इस यात्रा पर लोग निकलते ही हैं। ऐसे में प्रशासन और सरकार पर यह जिम्मेदारी होती है कि वह उनके जज्बे को सम्मान देते हुए यात्रा की ऐसी सुरक्षित व्यवस्था करे कि जोखिम कम से कम उठाना पड़े। और केवल अमरनाथ यात्रा ही नहीं. देश के तमाम तीर्थों पर इंतजाम उम्दा ही होने चाहिए। अफसोस कि इस ओर बार–बार लापरवाही जनित दुखद परिणाम देखने मिलते हैं। धार्मिक स्थलों पर कभी भगदड़ मचती है, कभी डूबने से मौतों की खबरें आती हैं। कभी वाहनों की दुर्घटना की खबर आती है। ऐसे हादसे एकाध बार अनायास हो जाएं, तो उनका दोष दुर्भाग्य पर मढ़ा जा सकता है। लेकिन साल दर साल धार्मिक स्थलों से दुर्घटनाओं की खबरें आना, दुर्भाग्य का नहीं, प्रबंधन की दुर्गति और अव्यवस्था का परिचायक है। अमरनाथ यात्रा में हाल ही में हुई बस दुर्घटना शायद इसी अव्यवस्था का परिणाम रही। अमरनाथ के दर्शन को जा रहे श्रद्धालुओं से भरी एक बस जम्मू–श्रीनगर नेशनल हाइवे पर रामबन जिले के पास एक गहरे गड्ढ़े में गिर गई। इस हादसे में १६ तीर्थयात्रियों की मौत हो गई, जबकि १६ से ज्यादा श्रद्धालु गंभीर रूप से घायल हुए हैं। इसके एक सप्ताह पहले ही एक बस पर आतंकी हमला हुआ था, जिस पर देश भर में रोष और क्षोभ का माहौल था। लोगों की नाराजगी को भांपते हुए सरकार ने ऐलान किया था कि हमलावरों को चुन–चुन कर मारा जाएगा। सरकार अभी इस दिशा में काम कर भी रही है। लेकिन क्या कभी उन लोगों की शिनाख्त भी की जाएगी, जिनकी लापरवाही से दूसरों की जान पर बन आती है। अभी जिस मार्ग पर दुर्घटना हुई है, २०१२ में भी इसी रास्ते पर दुर्घटना में १५ लोगों की मौत हो गई थी। यूं पहाड़ी रास्तों पर सफर हमेशा ही खतरों से भरा होता है, लेकिन अगर सड़कों की दशा अच्छी हो, पहाड़ी रास्तों पर वाहनों का जमावड़ा न हो, यातायात पर कड़ी निगरानी हो, मजबूत रेलिंग हो, हर थोड़े अंतराल पर साइन बोर्ड लगे हों, तो इन खतरों को न्यूनतम किया जा सकता है। २०१४ में आई भयावह बाढ़ के बाद, एकाध बारिश में ही इन सड़कों की खस्ता हालत सामने आ जाती है। अमरनाथ यात्रा में वाहनों का तांता का तो लगा ही रहता है, अगर यातायात का दबाव कम करने के लिहाज से निश्चित अंतराल पर वाहनों की संख्या तय कर, उतने ही वाहन बढने दिए जाएं, तो सड़कों पर बोझ कम पड़ेगा। अमरनाथ यात्रा में इस बार एक मिनी बस और ट्रक की टक्कर हुई, एक बस में सिलेंडर फट गया, और अब यह बस नाले में फिसल कर जा गिरी। इन सब में हताहत यात्रियों को महज मुआवजा देने से सरकार की जिम्मेदारी पूरी नहीं होगी, बल्कि उसे अपना कर्तव्य भी निभा कर दिखाना होगा। हम हर हादसे के लिए किसी और को दोषी नहीं बता सकते। वैसे इससे पहले अमरनाथ यात्रा पर हुए आतंकी हमले को सांप्रदायिक रंग देने वालों को यह बात अवश्य याद रखनी चाहिए कि रविवार को हुई बस दुर्घटना में मृतकों की संख्या और बढ़ सकती थी, अगर स्थानीय नौजवान मदद के लिए तुरंत नहीं पहुंचते। नाशनाला, बनिहाल में हादसे की जगह २३ साल के वानी इमाद जैसे स्थानीय लड़कों ने सुरक्षा बलों के पहुंचने से काफी पहले अहम भूमिका अदा की। लेकिन देश को यह याद रखना होगा कि इंसानियत हमेशा से ही जिंदा है।

राष्ट्रीय उद्‌बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

चीन को पीछे हटना ही पड़ेगा

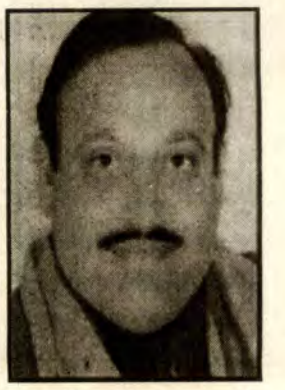

भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामरिक व सैन्य शक्ति में अप्रत्याशित वृद्धि से चीन भड़क गया है, फलतः पिछले एक माह से भी ज्यादा समय से डोकलाम में भारत–चीन सीमा विवाद चरम पर है। चीन अपने विशिष्ट दबाव की रणनीति के अंतर्गत अपने विस्तारवादी वर्चस्व को आगे बढ़ाता रहता है। इसके सबसे ज्वलंत उदाहरण के रूप में दक्षिण चीन सागर को देखा जा सकता है। पिछले ३ वर्षों में चीन ने बिना एक भी गोली चलाए दक्षिण चीन सागर के लगभग दो तिहाई हिस्से पर कब्जा कर लिया है। अब इसी रणनीति के अंतर्गत चीन ने भारत पर दबाव डालने के लिए डोकलाम में हस्तक्षेप की नीति अपनाई है। चीन लगातार भारत को १९६२ के युद्ध के बारे में स्मरण दिला रहा है और उससे भी बुरा परिणाम भुगतने की चेतावनी दे रहा है। रक्षा मंत्री अरुण जेटली ने इस पर बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में कहा कि भारत अब १९६२ से २०१७ में आ चुका है। चीन का कहना है कि चीन भी १९६२ से जैसा नहीं है बल्कि २०१७ का चीन अलग है। दरअसल चीन को समझ लेना चाहिए कि भारत अब उभरती शक्ति नहीं अपितु उभरी हुई शक्ति है। जहाँ तक १९६२ की हार की बात है तो यह एक तरह राजनीतिक पराजय थी, न कि सैन्य हार। भारत पंचशील के स्वर्णिम स्वप्न में खोकर जब हिंदी–चीनी भाई–भाई के नारे में खोया हुआ था, तभी १९६२ की लड़ाई चीन द्वारा विश्वासघात के रूप में हुई। परंतु चीन को १९६२ के आगे के इतिहास को भी याद रखना चाहिए। २०१७ में १९६२ को स्मरण कराने वाले चीन को १९६७ भी याद रखना चाहिए। १९६२ के ५ वर्ष बाद इतिहास इसका भी गवाह है कि १९६७ में हमारे जांबाज सैनिकों ने चीन को जो सबक सिखाया था, उसे वह कभी भुला नहीं पाएगा। यह सब भी उन महत्वपूर्ण कारणों में से एक है जो चीन को भारत के खिलाफ किसी दुस्साहस से रोकता है। १९६७ के २० वर्ष बाद भारत से चीन को फिर से गहरा झटका लगाए जिसकी बुनियाद १९८६ में चीन की ओर से रखा गयी। इस बार फिर टकराव पर चीन ने भारत को कहा कि भारत को इतिहास का सबक नहीं भूलना चाहिए, पर लगता है कि चीन भी कुछ भूल गया है। १९८६–८७ में भारतीय सेना ने शक्ति प्रदर्शन में पीएलओ को बुरी तरह से हिला दिया था। इस संघर्ष की शुरूआत तवांग के उत्तर में समदोरांग चू रीजन में १९८६ में हुई थी जिसके बाद उस समय के सेना प्रमुख जनरल कृष्णास्वामी सुंदरजी के नेतृत्व में ऑपरेशन फाल्कन हुआ था। सदैव अतीत के गायन में व्यस्त रहने वाले ग्लोबल टाइम्स को १९६७ एवं १९८६ के उपरोक्त घुटने टेकने वाली घटनाओं के अतिरिक्त यह भी याद रखना चाहिए कि वियतनाम युद्ध के बाद चीनी सेनाओं ने कोई भी लड़ाई नहीं लड़ी है जबकि भारतीय सेना सदैव पाकिस्तानी सीमा पर अघोषित युद्ध से संघर्षरत ही रहती है। विशेष कर हिमालयी सरहदों में चीन की इतनी काबिलियत नहीं है कि वह भारत का मुकाबला कर सके। तुलनात्मक तौर पर भारत चीन के समक्ष भले ही कमजोर लग सकता है, परंतु वास्तविक स्थिति ऐसी नहीं है। स्पष्ट है कि अपनी विशिष्ट एवं अचूक रणनीति के द्वारा भारत न्यूनतम संसाधनों के बीच भी चीन को हराने में सक्षम है। डोकलाम क्षेत्र में भारत की भौगोलिक स्थिति हो या हथियार, दोनों ही चीन से बेहतर हैं। भारतीय सुखोई हो या ब्रह्मोस इसकी चीन के पास कोई काट नहीं है। चीनी सुखोई ३० एमकेएम एक साथ केवल २ निशाने साध सकता है, जबकि भारतीय सुखोई एक साथ ३० निशाने साध सकता है। अभी अमेरिकी विशेषज्ञों के अनुसार भारत ऐसे मिसाइल सिस्टम के विकास में लगा हुआ है, जिससे दक्षिण भारत से भी चीन पर परमाणु हमला किया जा सकता है। भारत अभी उत्तरी भारत से मिसाइल से न केवल चीन अपितु यूरोप के कई हिस्सों पर भी हमला करने में सक्षम है। इस तरह चीन भारतीय मिसाइलों के परमाणु हमलों के पूरी तरह रेंज में है, जो भारत को चीन के प्रति निवारक शक्ति उपलब्ध कराता है। विश्व अभी जिस वैश्विक मंदी से गुजर रहा है, वहीं भारत ७ की विकास दर बनाए हुए है। इस स्थिति में चीन भारत के सशक्त बाजार पर भी निर्भर है। भारत–चीन व्यापार संतुलन भी चीन की ओर ही झुका हुआ है। ऐसे में संबंधों में और कटुता की वृद्धि होने से चीन को इस व्यापार से भी हाथ धोना पड़ेगा। चीन भारत के साथ व्यापार को कितना महत्व देता है, उसे नाथू ला के नवीनतम घटना से भी समझा जा सकता है। डोकलाम मुद्दे पर भारत पर दबाव डालने के लिए चीन ने नाथू ला दर्रे से मानसरोवर यात्रा रोकी, लेकिन व्यापार बिल्कुल नहीं। इस तरह अतीत की व्याख्या, सामरिक व्याख्या एवं आर्थिक व्याख्याओं से स्पष्ट है कि डोकलाम से चीन ही पीछे हटेगा।

राष्ट्रीय आह्‌वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

तुलसी की जीवन में महत्ता व उपयोगिता

तुलसी धार्मिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दृष्टि से मानव–जीवन के लिए सब प्रकार से कल्याणकारी है। इसीलिए प्रायः प्रत्येक सुसंस्कृत परिवार के घर में तुलसी–पौधा अवश्य पाया जाता है। पूर्वकाल में तुलसी–पौधा हर घर में होता था।

घर-घर में होती है तुलसी पूजा–गाँवों में तो घर–घर में मिट्टी के चबूतरे पर तुलसी–पौधा लगाकर स्त्रियाँ प्रायः प्रतिदिन पूजा करती व अर्घ्य देती हैं तथा सायंकाल दीपक दिखाती–चढ़ाती हैं। तुलसीजी से प्रार्थना करती हैं कि 'हमें सुख–समृद्धि, दीर्घायु, सौभाग्य, भगवत्प्रीति आदि प्रदान करें।' घर के अन्य सदस्य भी पूजा–अर्चना करते हैं। खास अवसरों पर तुलसीजी की पूजादि एवं अनुष्ठानिक कार्यक्रम विशेष रूप से आयोजित किये जाते हैं तथा तुलसी–पत्तों का प्रसाद रूप में वितरण किया जाता है। चरणामृत में तो निश्चित रूप से तुलसी–पत्ते डाले जाते हैं।

तुलसी-पूजन का राज–'स्कंद पुराण' (का. खं. : २१.६६) में आता है:

तुलसी यस्य भवने प्रत्यहं परिपूज्यते।
तद्गृं नोपसर्पन्ति कदाचित् यमकिंकराः।।

'जिस घर में तुलसी–पौधा विराजित हो, लगाया गया हो, पूजित हो, उस घर में यमदूत कभी भी नहीं आ सकते।'

अर्थात् जहाँ तुलसी–पौधा रोपा गया है, वहाँ बीमारियाँ नहीं हो सकतीं क्योंकि तुलसी–पौधा अपने आसपास के समस्त रोगाणुओं, विषाणुओं को नष्ट कर देता है एवं २४ घंटे शुद्ध हवा देता है। जिस घर में तुलसी के पर्याप्त पौधे लगाये गये हों, वहाँ निरोगता रहती है, साथ ही वहाँ सर्प, बिच्छू, कीड़े–मकोड़े आदि नहीं फटकते। इस प्रकार तीर्थ जैसा पावन वह स्थान सब प्रकार से सुरक्षित

रहकर निवास–योग्य माना जाता है। वहाँ दीर्घायु प्राप्त होती है।

पूज्य बापूजी कहते हैं : "तुलसी निर्दोष है। हर घर में तुलसी के १–२ पौधे होने ही चाहिए और सुबह तुलसी के दर्शन करो। उसके आगे बैठ के लम्बे श्वास लो और छोड़ो, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, दमा दूर रहेगा अथवा दमे की बीमारी की संभावना कम हो जाएगी। तुलसी को स्पर्श करके आती हुई हवा रोग प्रतिकारक शक्ति बढ़ाती है और तमाम रोग व हानिकारक जीवाणुओं को दूर रखती है।"

तुलसी को आवास के पास लगाने की इतनी अधिक महत्ता है कि सीताजी एवं लक्ष्मणजी ने भी इसे अपनी पर्णकुटी के आसपास लगाया था।

तत्त्वदर्शी ऋषि–महर्षियों ने तुलसी में समस्त गुणों को परखकर इसमें देवत्व एवं मातृत्व को देखा। अतः देवत्व एवं मातृत्व का प्रतीक मानकर इसकी पूजा–अर्चना तथा पौधा लगाने का विशेष प्रावधान किया गया।

तुलसी माहात्म्य

'ब्रह्मवैवर्त पुराण' (प्रकृति खंड : २१.३४) में भगवान नारायण कहते हैं : 'हे वरानने! तीनों लोकों में देव–पूजन के उपयोग में आने वाले सभी पुष्पों और पत्रों में तुलसी प्रधान होगी।"

'श्रीमद् देवी भागवत' (९.२५.४२–४३) में भी आता है : 'पुष्पों में किसी से भी जिनकी तुलना नहीं है, जिनका महत्त्व वेदों में वर्णित है, जो सभी अवस्थाओं में सदा पवित्र बनी रहती हैं, जो तुलसी नाम से प्रसिद्ध हैं, जो भगवान के लिए शिरोधार्य हैं, सबकी अभीष्ट हैं तथा जो सम्पूर्ण जगत को पवित्र करने वाली हैं, उन जीवन्मुक्त, मुक्तिदायिनी तथा श्रीहरि की भक्ति प्रदान करने वाली भगवती तुलसी की मैं उपासना करता हूँ।'

तुलसी रोपने तथा उसे दूध से सींचने पर स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। तुलसी की मिट्टी का तिलक लगाने से तेजस्विता बढ़ती है।

'तुलसी के पत्ते त्रिदोषनाशक हैं, इनका कोई दुष्प्रभाव नहीं है। ५–७ पत्ते रोज ले सकते हैं। तुलसी दिल–दिमाग को बहुत फायदा करती है। मानो ईश्वर की तरफ से आरोग्य की संजीवनी है 'संजीवनी तुलसी'। मेरे को तो बहुत फायदा हुआ।

भोजन के पहले अथवा बाद में तुलसी–पत्ते लेते हो तो स्वास्थ्य के लिए वायु व कफ शमन के लिए तुलसी औषधि का काम करती है। खड़े–खड़े या चलते–चलते तुलसी–पत्ते खा सकते हैं लेकिन और चीज खाना शास्त्र–विहित नहीं है, अपने हित में नहीं।

दूध के साथ तुलसी वर्जित है, बाकी पानी, दही, भोजन आदि हर चीज के साथ तुलसी ले सकते हैं। रविवार को तुलसी ताप उत्पन्न करती है इसलिए रविवार को तुलसी न तोड़ें, न खायें। ७ दिन तक तुलसी पत्ते बासी नहीं माने जाते।

विज्ञान का आविष्कार इस बात को स्पष्ट करने में सफल हुआ है कि तुलसी में विद्युत–तत्त्व उपजाने और शरीर में विद्युत–तत्त्व को सजग रखने का अद्भुत सामर्थ्य है। थोड़ा तुलसी–रस लेकर तेल की तरह थोड़ी मालिश करें, तो विद्युत–प्रवाह अच्छा चलेगा।"

तुलसी की वृद्धि व सुरक्षा के उपाय–यदि तुलसी–दल को तोड़ें तो उसकी मंजरी और पास के पत्ते तोड़ने चाहिए जिससे पौधे की बढ़ोतरी अधिक हो। मंजरी तोड़ने से पौधा खूब बढ़ता है।

यदि पत्तों में छेद दिखाई देने लगे तो गौ–गोबर के कंडों की राख कीटनाशक के रूप में प्रयोग करनी चाहिए।

साभार ऋषि प्रसाद

जब आये हिचकी

श्री मधुसूदनजी भार्गव

भारतीय समाज में हिचकी का सम्बन्ध इस बात से लगाया जाता है कि हमारे किसी प्रियजन, परिचित या संबंधी द्वारा हमें याद किया जा रहा है।

हिचकी आने के मुख्य कारण है- तीक्ष्ण पदार्थों का सेवन, उत्तेजक दवा, आवश्यकता से अधिक भोजन करने, मिर्च मसालेदार, देर से पचने वाले एवं रूखे भोजन, धूल, धुँआ, व्रत, उपवास के कारण भी हिचकियाँ आने लगती हैं। प्रायः छोटे–छोटे बच्चों को भी कई बार हिचकियाँ आने लगती हैं। उसका कारण यह है कि बच्चों को दूध पिलाने से जो गैस बनती है वह डायफ्राम से टकराकर फ्रेकि नामक नस में खिंचाव पैदा करती है इस कारण भी बच्चों को हिचकियाँ आने लगती हैं– रोग की दृष्टि से हिचकी स्वयं तो कोई गम्भीर रोग नहीं है, परन्तु यह किसी अन्य गम्भीर रोग का संकेत देती है तथा रुग्ण व्यक्ति को इससे कष्ट भी होता है। अतः इसे मिटाना आवश्यक है।

हिचकी दूर करने के उपाय-

पश्चिमी जर्मनी के एक वैज्ञानिक का मत है कि यदि हिचकियाँ आने का क्रम जारी हो जाय तो कुछ दाने शक्कर के निगल लो।

- ताजी मूली के पत्ते का रस चूसते रहें, इससे भी हिचकी आना बंद हो जाती है।
- अजवाइन के दाने मुँह में दबाकर उसका रस चूसते रहें।
- नारियल के बुरादे में मिस्री डालकर सेवन करें।
- कागजी नींबू का रस चूसते रहें।
- पिसी काली मिर्च और पिसी मिस्री आधा–आधा चम्मच मात्रा में मिलकार पानी के साथ फाँकने से हिचकी बंद हो जाती है।
- हर घंटे के अंतराल पर एक–एक चम्मच शुद्ध शहद चाटने से हिचकी में आराम मिलता है।
- पोदीने के पत्ते मुँह में रखकर चूसें या पोदीने के साथ शक्कर मिलकार चबायें।
- गाय के दूध में मिस्री डालकर पीयें।
- एक छोटा चम्मच तुलसी का रस, आधा चम्मच शहद एक साथ मिलकार सुबह शाम लें।
- मुलहठी का चूर्ण शहद के साथ चाटने से हिचकी आनी बंद हो जाती है।
- चार छोटी इलायची छिलका सहित कूट लें, उसे आधा लीटर पानी में उबालें। जब पानी आधे से कम रह जाय तो उतारकर छान लें एवं रोगी को कुनकुना पिला दें। हिचकी बंद हो जाएगी।

सन्तोष गुलाटी की बरसी मनाई

बुलन्दशहर १४ जून! इन्द्र देव गुलाटी की पत्नी स्वर्गवासी श्री मती सन्तोष गुलाटी की बरसी मनाई गई। ग्यारह माह पूर्व आज के ही दिन उनका निधन हुआ था। शिव मन्दिर के मुख्य विद्वान पुजारी महन्त रामचन्द्र गिरि ने अपने सहयोगियों के साथ हवन कराया और सबसे मौन रखवा कर दिवंगत आत्मा की शांती व सद्गति के लिए सनातन धर्म की विधि के अनुसार प्रार्थना कराई। ब्राहमणों एवं ब्राहमणी को भोजन कराया गया तत्पश्चात् अन्य उपस्थित जनों को भोजन खिलाया गया। स्मरण रहे कि श्रीमती गुलाटी कष्ट निवारण यज्ञ गिरि जी से ही कराना चाहती थी जो नहीं हो सका अतः रस्म पगड़ी तथा बरसी के हवन आदि इनसे ही कराए गए।

नमस्ते या नमस्कार

१. **अभिवादन के लिए,** इन दोनों शब्दों का प्रयाग तो होता है लेकिन अधिकांश को इनका अर्थ या इनके अन्तर की जानकारी प्रायः नहीं है जबकि होनी चाहिए।

२. नमस्ते का अर्थ है–मैं आपका आदर–सम्मान करता हूं।

३. नमस्कार का अर्थ है– मुझे आपका आदर–सम्मान करना चाहिए।

४. महर्षि दयानन्द ने नमस्ते शब्द का ही प्रयोग करने के लिए कहा था।

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

रक्षा बंधन सुरक्षा और बिना शर्त प्रेम के वचन का धागा

भारत अतुल्य है। यह त्योहारों, उत्सवों की धरती है। मनुष्य के आपसी संबंधों और जुड़ाव को भी त्योहार के जरिए प्रकट किया जाता है। रक्षा बंधन भी एक ऐसा ही त्योहार है, जो भाई और बहन के बीच बिना शर्त के प्रेम को प्रकट करता है। इसे राखी पूर्णिमा के तौर पर भी जाना जाता है। यह त्योहार हिंदू चंद्र कैलेंडर के सावन माह में पूर्ण चंद्र के दिन होता है, जिसे पूर्णिमा कहा जाता है। राखी एक धर्मनिरपेक्ष त्योहार है। इसे पूरे देश में मनाया जाता है। राज्य, जाति और धर्म कोई भी हो, हर व्यक्ति इसे मनाता है। राखी मॉरीशस और नेपाल में भी मनाई जाती है।

रक्षा बंधन का शाब्दिक र्थ हुआ रक्षा का बंधन। भाई र बहन इस दिन एक–दूसरे के ते अपने नैसर्गिक प्रेम को र्शित करते हैं। भाई अपनी बहन हर मुश्किल परिस्थिति में रक्षा रने और किसी भी अप्रिय स्थिति से बचाने का वचन देता है। बहनें अपने भाई की लंबी आयु की कामना करती हैं।

रक्षा बंधन का इतिहास

राखी से कई कहानियां जुड़ी हैं। कई लोकप्रिय कथाओं में कुछ चुनिंदा इस तरह है

महान ऐतिहासिक ग्रंथ महाभारत के मुताबिक एक बार भगवान कृष्ण, पांडवों के साथ पतंग उड़ा रहे थे। उस समय धागे की वजह से उनकी अंगुली कट गई। तब द्रोपदी ने बहते खून को रोकने के लिए अपनी साड़ी का कपड़ा फाड़कर उनकी अंगुली

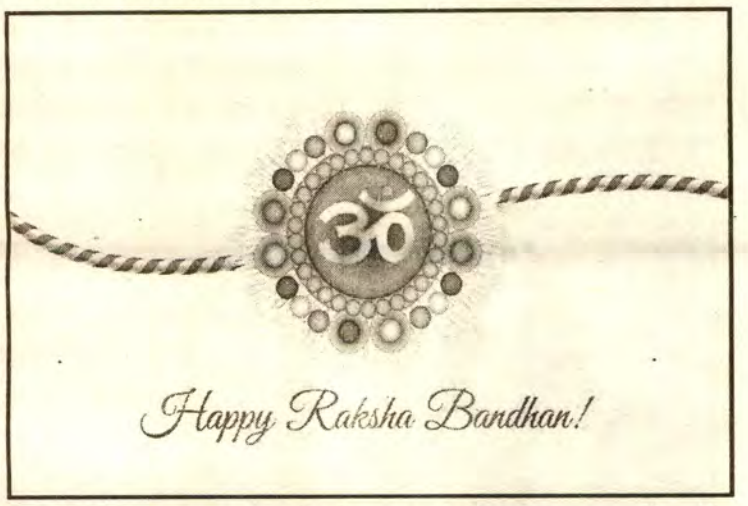

पर बांधा था। भगवान कृष्ण द्रोपदी के इस प्रेम से भावुक हो गए और उन्होंने आजीवन सुरक्षा का वचन दिया। यह माना जाता है कि चीर हरण के वक्त जब कौरव राजसभा में द्रोपदी की साड़ी उतार रहे थे, तब कृष्ण ने उस छोटे से कपड़े को इतना बड़ा बना दिया था कि कौरव उसे खोल नहीं पाए।

भाई और बहन के प्रतीक रक्षा बंधन से जुड़ी एक अन्य रोचक कहानी है, मौत के देवता भगवान यम और यमुना नदी की। पौराणिक कथाओं के मुताबिक यमुना ने एक बार भगवान यम की कलाई पर धागा बांधा था। वह बहन के तौर पर भाई के प्रति अपने प्रेम का इजहार करना चाहती थी। भगवान यम इस बात से इतने प्रभावित हुए कि यमुना की सुरक्षा का वचन देने के साथ ही उन्होंने अमरता का वरदान भी दे दिया। साथ ही उन्होंने यह भी वचन दिया कि जो भाई अपनी बहन की मदद करेगा, उसे वह लंबी आयु का वरदान देंगे।

यह भी माना जाता है कि भगवान गणेश के बेटे शुभ और लाभ एक बहन चाहते थे। तब भगवान गणेश ने यज्ञ वेदी से संतोषी मां का आह्वान किया। रक्षा बंधन को शुभ, लाभ और संतोषी मां के दिव्य रिश्ते की याद में भी मनाया जाता है।

राखी के सांकेतिक रंग

राखी से पीले, नारंगी और लाल रंग का जुड़ाव ज्यादा है। यह रंग है भी प्रेम और वफादारी के प्रतीक।

रविंद्र नाथ ठाकुर ने इन रंगों में सफेद भी जोड़ा था। सफेद रंग भाई–बहनों के आपसी रिश्ते को और मजबूत बताते हुए खून के रिश्ते को दोस्ती में बदलता है।

समारोह

राखी को बड़े उत्साह के साथ इस तरह मनाया जाता है बहनें अपने भाइयों के लिए पसंदीदा राखियां खरीदने के लिए काफी पहले से तैयारी करती हैं। कई बहनें अपने से दूर रह रहे भाइयों को पोस्ट के जरिए राखी भेजती हैं। भाई भी बहनों के लिए उपहार तलाशना शुरू कर देते हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि उनके पास कितने पैसे हैं और उनका बजट क्या है।

इंटरनेट के इस जमाने में, ऑनलाइन स्टोर से सीधे राखी और उपहार भेजने का चलन भी तेजी से बढ़ रहा है। कुछ तो वास्तविक राखियों के स्थान पर वर्चुअल राखियां देने की भी सोचते हैं। राखी के दिन हर घर में उत्साह का माहौल रहता है। पूरा परिवार एकजुट होता है। परिवार के सदस्य

शेष पृष्ठ 11 पर

स्वतन्त्रता दिवस की ७० वीं वर्ष गाँठ (१५ अगस्त २०१७)

"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।" महर्षि दयानन्द सरस्वती, संस्थापक आर्य समाज

- स्वतन्त्रता का आवहान सबसे पहले आपने ही किया था इसलिए स्वतन्त्र भारत में आपको राष्ट्रपिता माना जाना चाहिए था।
- "स्वतन्त्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, मैं उसे लेकर रहूँगा।"
- लोक मान्य बाल गंगाधर तिलक, कांग्रेस के गरम दल के नेता।
- आपके स्वर्गवासी हो जाने पर कांग्रेस के नरम दल के नेता गांधी जी ने इसको तुष्टीकरण वादी बना दिया।
- तर्क और प्रमाण देकर सिद्ध किया कि अखण्डित भारत स्वाभाविक रूप से हिन्दू राष्ट्र है। –स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर।
- ब्रिटिश वायसराय ने उत्तर दिया कि आपके साथ भीड़ नहीं है।
- बिना मुस्लिमों के, देश स्वतन्त्र नहीं हो सकता है अतः उन्हें साथ लेकर संघर्ष करना उचित रहेगा–मोहनदास कर्मचन्द गांधी।
- गांधी जी ने चरम सीमा तक मुस्लिमों का तुष्टीकरण किया किन्तु केवल सात प्रतिशत मुस्लिमों ने ही १९४५–४६ में कांग्रेस को वोट दी जबकि ६३ प्रतिशत मुस्लिमों ने मुस्लिम लीग को वोट देकर विभाजन का समर्थन किया।
- हिन्दुओं को वीर सावरकर को अपना नेता मानना चाहिए और हिन्दू महासभा को अपनी राजनीतिक पार्टी–मौहम्मद अली जिन्ना संस्थापक पाकिस्तान।
- मुर्दा–मूर्ख हिन्दुओं को सही बात पसन्द नही आई क्योंकि उनका बुरा समय चल रहा था और अभी भी चल रहा है इसलिए कहते हैं कि विनाश काले विपरीत बुद्धि।
- "आर्य समाजी कहते है कि देश को स्वतन्त्र कराने का मुख्य श्रेय उन्हें है क्योंकि कांग्रेस में 80 प्रतिशत आर्य समाजी थे।"
- कांग्रेस में 40 प्रतिशत ही आर्य समाजी थे शेष 40 प्रतिशत वे लोग थे जो आर्य समाज की विचार धारा और सोच को सही मानते थे।
- जब सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि राजनीति करने के लिए राजार्य सभा बनाई जाए तब आर्यो ने राजार्य सभा क्यों नहीं बनाई? सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर उस पर अमल क्यों नहीं किया?
- १९०८ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली में पंजीकृत हुई। उसके पदाधिकारियों ने राजार्य सभा बनाकर आर्यों को कांग्रेस में जाने से क्यों नहीं रोका? और अभी भी गलती किए जा रहे हैं।
- गायत्री मंत्र में सद्बुद्धि मांगी गई है फिर कलयुग में ईश्वर ने आर्यों को विपरीत बुद्धि/कुबुद्धि क्यों दी? इसका उत्तर कौन देगा?
- कांग्रेस मुस्लिम समर्थक थी और है जबकि हिन्दू महासभा हिन्दू हितैषी थी और हैं फिर आर्यों को कांग्रेस ही पसन्द क्यों आई थी? और अभी भी जा रही है? इसका उत्तर दिया जाना चाहिए।
- सत्यार्थ प्रकाश के प्रबल समर्थक कहते हैं कि इसमें सभी समस्याओं का समाधान है। हम पूछते हैं कि १९४७ में देश विभाजन की मांग का क्या समाधान था या है?
- तुष्टीकरण की नीति पर चलने के कारण खण्डित भारत की दशा १९४७ से भी ज्यादा खराब हो गई है जैसे कश्मीर में अशान्ति, गैंगरेप, लड़कियों की सुरक्षा, घुसपैठियों का निष्कासन, रामजन्मभूमि मन्दिर विवाद, तीन तलाक, हिन्दुओं की घट रही संख्या, बेरोजगारी आदि। सत्यार्थ प्रकाश के प्रबल समर्थकों से अनुरोध है कि वे इन समस्याओं का समाधान बताएँ।
- अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश के अविभाजित भारत से अलग हो जाने के बाद खण्डित भारत का क्षेत्रफल लगभग १० लाख वर्गमील है। अभी पाकिस्तान कश्मीर को तथा चीन अरुणाचल प्रदेश को छीनना चाहता है।
- मुर्दा, मूर्ख, अदूरदर्शी विचारकों का अनुमान है कि ५० वर्षो के बाद देश की सत्ता हिन्दू के हाथों से निकल जाएगी।
- जब उनसे पूछा गया कि ऐसी स्थिति को रोकने के लिए आप क्या कर रहें हैं?
- उत्तर मिलता है कि तब हम नहीं होंगे इसलिए हम कुछ नहीं करेंगें।

निष्कर्ष

यदि हिन्दू महासभा बलशाली कर दी जाती तो स्वतन्त्र भारत में कांग्रेस और हिन्दू महासभा की संयुक्त सरकार बनती तब भारत सरकार हिन्दुओं की उपेक्षा व अवहेलना नहीं कर सकती थी अतः आर्य जन अपनी गलती सुधारें।

सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

महर्षि दयानन्द व सत्यार्थ प्रकाश का आज भी तिरस्कार केन्द्र पाठ्यक्रमों की अक्षम्य भूल

✍ हरिकृष्ण निगम

आज यह अनुभव किया जा रहा है कि चाहे केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा अनुमोदित एवं प्रकाशित अद्यतन पाठ्यक्रम या पाठ्यपुस्तके हों, वे तथ्य परक शैक्षणिक सक्षमता देने के स्थान पर विद्यार्थियों को मात्र राजनीतिक सक्रियता का एकांगी पाठ पढ़ाने में जुटी है। हाल का एक ऐसा उदाहरण सामने आया है जैसे सम्बद्ध प्राधिकरणों व सरकारी चैनलों ने आधुनिक युग के महान समाज सुधारक व हिन्दू धर्म के वैदिक रूपान्तरण के प्रखरतम प्रवक्ता महर्षि दयानन्द को उपेक्षित व अपमानित करने की ठान ली है। उनके बारे में कुछ मौलिक तथ्यों को भी छिपाकर मान उन्हें मूर्ति पूजा विरोधी और अंधश्रद्धा निर्मूलक कहकर उनके वैदिक व्याख्याता व मीमांसक के महान ग्रंथ "सत्यार्थ प्रकाश" जो आज विश्व की ३० से अधिक भाषा में उपलब्ध है, उसका जिक्र भी नहीं किया गया है। वे कन्नौज के एक कट्टर सनातनी सनाट्य परिवार में जन्मे थे जहाँ उनका बालपन बीता था और धार्मिक कर्मकाण्ड में निष्णात जीविका की खोज में गुजरात के टंकारा में अपने पिता के साथ आये थे। उनका कुलनाम 'तिवारी' या 'त्रिवेदी' था और उनके द्वारा अपनी पत्नी पर कड़ाईसे व्रत, नियम, स्नान आदि के अत्याचारों की प्रतिक्रिया के रूप में बालक दयानन्द का आक्रोश बोधोत्सव के रूंप में एक चिनगारी के रूप में स्फूलित हो उठा था। अनेक भाषाओं को जानने के बाद भी उन्होंने वार्तालाप, शास्त्रार्थ, वाद विवाद व प्रवचनों में मात्र हिन्दी और संस्कृत का ही प्रयोग किया था। आज चाहे इतिहास और नागरिक शास्त्र की आई.सी. एस. ई के मिडिल स्कूल (सी. आई. एस. सी. ई. की कोई पुस्तक हो अथवा सी. बी. एस. ई. का कोई आधुनिक इतिहास का ग्रंथ हो स्वामी दयानन्द व आर्य समाज के बाल विवाह के विरोध, बालिकाओं की शिक्षा या महिला अधिकारों के समर्थन का कोई उल्लेख नहीं दीखता? विज्ञान की अद्यतन शाखाओं की जड़े वेदों में है यह तथ्य कहीं भी उल्लखित नही हैं।

नया कम्प्यूटर–समुनुकूल समग्र समन्वित २०१६–१७ के काउन्सिल फॉर द इण्डिसन स्कूल सर्टीफिकेट इग्जामिनेशन (सी. आई. एस. ई.) की ८ वीं कक्षा के पाठ्यक्रम के लिए रु० ३७० का एक ग्रंथ 'द ट्रेल' मेरे सामने है जिसकी लेखिका जयन्ती सेन गुप्ता ने इसे एक वैश्विक अनुबंध के तहत आक्स फोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस से आई. सी. एस. ई. मिडिल स्कूल के आधिकारिक पाठ्यक्रम में इतिहास और नागारिक शास्त्र विषय के लिए २०० पृष्ठों के

कलेवर में प्रकाशित की है। यह पुस्तक ऑन–लाइन डिजिटल, श्रव्य दृश्य माध्यम से अर्थात संचार प्रणाली के द्वारा प्रश्नोत्तर के अभ्यास के लिए भी अनुमोदित है। इस पाठ्यक्रम को एक 'टेक्निकल मैनुअल' के संस्करण के रूप में शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा अभ्यास के लिए संभावित उत्तर के साथ प्रस्तुत किया गया है जो अनेक स्थानों पर महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के लिए नकारात्मक ही नहीं निन्दात्मक भी हैं। साफ है जहाँ भी उन देश भक्तों का जिक्र है जो कट्टर आर्य समाजी थे उन पर 'तत्कालीन कांग्रेस' व नेहरू गाँधी का विद्वेष सामने लाया गया है। जयन्ती सेनगुप्ता को इतिहास की वरिष्ठ व अनुभवी प्राध्यापिका कहा गया है जो कोलकाता के प्रिट मेमोरियल स्कूल में ३० वर्षो से पढ़ा रही है और विषय पर अनेक कार्यशालायें आयोजित कर चुकी हैं उन्हें काउसिल फॉर व इण्डियन स्कूल सर्टीफिकेट इकनामिनेशन (सी. आई. एस. सी. ई.) का प्रमुख 'रिसोर्स पर्सन' भी कहा गया है। देश के कोने कोने में फैले केन्द्रीय स्तर के अंग्रेजी विद्यालयों में उपयोग के लिए इस पाठ्यक्रम के बीसों संस्करण लाखों की संख्या में आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस के दिल्ली के वाई. एम. सी. ई. लायब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह मा से प्रकांशित की चुकी है। क हम जानते है कि चाहे कच्छ कोहिमा हो गंगानगर से ईटा न या कलकत्ते से अंदमान अथ लक्षद्वीप हो, ६ से ८ वें वर्ग के ८ से तीन विषय आधुनिक इतिह व नागरिक शास्त्र हो, इतिहा को विशेषकर आर्यसमाज के प्रणेत स्वामीदयानन्द के अवदान को नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

मजे की बात यह है कि उपर्युक्त ग्रंथ में जहाँ भी च राजस्थान स्थित भीलवाड़ा शाहपुरा अथवा जोधपुर, जय स्थित विशाल देशी रियासतों भूखण्ड में आर्य समाज व राजकीय धर्म अपनाने का तत्का अंग्रेज वायसराय लार्ड रिपन आ के सहयोग व समर्थन का उल्लेख करने के स्थान पर नेहरू गाँधी को द्वेष भरी टिप्पणियों, प्रस्तावों व न्यायालयों तक में उनके विरु विज्ञाप्तियों को जारी करने राजनीतिक सहायता दी गई स्वामी दयानन्द की मातृभा शिक्षा प्रदान करने की आग्रही का भी मखौल उड़ाया गया वेदों को विज्ञान–दृष्टि की विद्याओं का जनक और कन्या भ्रूण हत्या का क्रूरतम ब्रह्म हत्या जैसा पाप कहना भी उपहास का पात्र बनाया गया है। देश का प्रबुद्व वर्ग आज "द ट्रेल' जैसी पाठ्यपुस्तकों पर अविलम्ब प्रतिबंध लगाकर पूर्णतः वैज्ञानिक, समत्वदर्शी एवं सार्वभौमिक सत्यों को उजागर करने वाले ग्रंथ "सत्यार्थ प्रकाश" की उपेक्षा करने वाली साजिश को नाकाम करना अनिवार्य है।

विडम्बना आस्ट्रेलिया में हिन्दी भारत में अंग्रेजी

✍ डॉ. बद्री नारायण तिवारी

राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा मेरा लेख–"जब विदेशी हिन्दी बोलेंगे और हम अंग्रेजी" शीर्षक से देश की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ–अति चर्चित हुआ। अभी मेलबर्न (आस्ट्रेलिया) का समाचार प्रायः हिन्दी के सभी प्रमुख पत्रों में प्रकाशित हुआ कि देश में भारतीयों की बढ़ती संख्या को देखते हुए विक्टोरिया सरकार ने संघीय अधिकारियों से कहा है कि वे हिन्दी को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में सम्मिलित करें। आस्ट्रेलिया की प्रदेश सरकार ने राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्राधिकरण के समक्ष इस सम्बन्ध में एक दस्तावेज प्रस्तुत किया। इसी के अंतर्गत एक प्रश्न भी उठाया कि हिन्दी को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की ११ भाषाओं में क्यों नहीं सम्मिलित किया गया है? इसी दस्तावेज में विक्टोरिया की प्रदेश सरकार ने स्पष्ट कहा है कि जब हिन्दी उनके देश में बोली जाने वाली १० मुख्य भाषाओं में शामिल है। दस्तावेज के अनुसार, यह बात समझ से परे है कि इस सम्बन्ध में जो निर्णय किया गया, उसमें हिन्दी को कैसे छोड़ दिया गया। दस्तावेज में यह कहा गया है कि आस्ट्रेलिया में बड़ी संख्या में भारतीय आ रहे हैं।

इसी सन्दर्भ में कहा गया कि भविष्य में हिन्दी की माँग अधिक बढ़ने वाली है। आस्ट्रेलिया में भारत के ३० प्रतिशत से भी अधिक पेशेवर कार्यरत हैं जबकि अपने ही देश में काम करने वाले आस्ट्रेलिया के पेशेवरों की संख्या का अनुपात १६ प्रतिशत भारत के २६ प्रतिशत से अधिक संख्या में लोग स्नातकोत्तर योग्यता हासिल कर रहे हैं, जबकि आस्ट्रेलिया मूल के मात्र ४ प्रतिशत लोग ही स्नातकोत्तर की पढ़ाई करने में रुचि रखते हैं। इससे पता चला है कि अप्रवासी लोग अपने बच्चों को भी यही योग्यता और पेशा हासिल करने हेतु प्रेरित करेंगे, जिससे हिन्दी की माँग निश्चित रूप से बढ़ेगी। इसी दृष्टिकोण से आस्ट्रेलिया की विक्टोरिया सरकार ने कहा है कि दोनों देशों के मध्य व्यापार और प्रतिबद्धता बढ़ने के साथ 'हिन्दी' कारपोरेट दुनिया में लोगों के बीच संसार में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगी। कुछ मास पूर्व समाचार प्रकाशित होते ही कि विगत ७० वर्षों से लंदन से (अंग्रेजी के गढ़ से) प्रसारित होने वाली बी.बी.सी. हिन्दी सेवा आर्थिका संकट के कारण मार्च २०११ से बन्द होने जा रही है। इसका सामूहिक रूप से विरोध होने पर बी.बी.सी. हिन्दी सेवा अलविदा को ब्रिटिश सरकार ने वापस लेकर अब भी अनवरत प्रसारण चालू है।

पत्रकार प्रवर डॉ. अनिल कटियार का अग्रलेख–'राष्ट्रभाषा से दूर भाग रहे हैं हिन्दी गढ़ों के प्रोफेसर' भारतवासियों को आँखें खोलने वाला है। एक ओर विदेशों में हिन्दी का प्रचार–प्रसार गतिशील हो रहा है इसके विपरीत डॉ. कटियार ने लिखा–"गत दिनों दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के अर्थशास्त्र विभाग की चार पुस्तकों का विमोचन किया गया, लेकिन बड़े आश्चर्य की बात है हिन्दी में एक भी पुस्तक नहीं लिखी गई। चारों पुस्तकें अंग्रेजी में लिखी गई"। 'गवर्नेस इश्यूज ऐंड करप्शन–ए–सिलेक्ट बिब्लिोग्राफी', 'डेवलपमेंट प्रोग्राम्ज इन इंडिया', 'कौटिल्य ऑन गवर्नेंस ऐंड करप्शन' तथा 'गवर्नेंस इश्यूज करप्शन'। ये विद्वान लेखक तथा विदूषियाँ विश्व के महान लोकतंत्र भारत में जन्मे, इसका अन्न जल खाकर

शेष पृष्ठ 10 पर

उच्च शिक्षा में भ्रष्टाचार

✍ डॉ. ओ.पी. मिश्र (पूर्व प्राचार्य)

भ्रष्टाचार ब्रह्म की तरह हमारे राष्ट्र–जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त है। चिन्ता उस समय ज्यादा बढ़ जाती है, जब वह उन क्षेत्रों को अपनी परिधि में ले लेता है, जिन्हें सदाचार सिखाने और उसे प्रचारित–प्रसारित करने के लिए सशक्त साधन माना जाता है यथा धर्म और शिक्षा। प्रस्तुत आलेख उच्च शिक्षा के भ्रष्टाचार पर केन्द्रित है। १९४७ में देश में केवल १६ विश्वविद्यालय थे। इस समय ५०० से अधिक हैं। केवल उत्तर प्रदेश में १३ राज्य विश्वविद्यालय, १ मुक्त विश्वविद्यालय, १ डीम्ड विश्वविद्यालय और २१ निजी विश्वविद्यालय हैं। इतनी बड़ी संख्या में विश्वविद्यालयों की स्थापना और उनके संचालन से आशा की गई थी कि वहाँ से निकले युवक विनयी, जिम्मेदार जीविका पाने में समर्थ तथा जीवन जीने की कला में निष्णात होंगे। अनुभव बताता है कि उच्च शिक्षा ने युवकों को अच्छा नहीं, बल्कि चंट–चालाक और कुतर्क के अभ्यासी बना दिया है। प्रश्न उठता है कि यह स्थिति क्यों आई? उत्तर है : उच्च शिक्षा अपने उद्देश्य से च्युत हो गई। विश्वविद्यालयों में न मौलिक विचारों का सृजन हो रहा है, न स्तरीय शोध कार्य और न जीवन की विभिन्न स्थितियों से निपटने की सामर्थ्य। फिर सोचना–समझना पड़ता है कि इसके मूल में क्या है? मोटा सा उत्तर मिलता है–भ्रष्टाचार। यह भ्रष्टाचार प्राध्यापन, शोध, मूल्यांकन, पुस्तकालय, प्रयोगशाला तथा क्रीड़ा सामग्री की खरीद में व्याप्त है।

विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में प्रोफेसर, एसोशिएट प्रोफेसर तथा असिस्टेंट प्रोफेसर के प्रति सप्ताह अध्यापन–कार्य के घंटे निर्धारित हैं। अपवादों को छोड़कर शेष लोग निर्धारित घंटे नहीं पढ़ाते और इसके लिए उनके अपने–अपने तर्क तथा बहाने हैं। जो शिक्षक पढ़ाते भी हैं, उनके पास अपने विषय का न अद्यतन ज्ञान है और न पढ़ाने की लालसा। इसका परिणाम है कक्षाओं में विद्यार्थियों की कम उपस्थिति। कठोपनिषद् में बताया गया है "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत" (उठो, जागो और श्रेष्ठ जनों के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करो।) क्या विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में अधीत विद्वान् हैं, जिनसे ज्ञानपिपासु विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करें? अब किसी विश्वविद्यालय में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, अमरनाथ झा, ए.सी. बनर्ज, प्रो. बीरबल साहनी और प्रो. जे. के. मेहता की मेधा वाले शिक्षक नहीं हैं। अर्थ प्रधान युग में विश्वविद्यालयीय शिक्षक अब ज्ञानी नहीं धनी होने के लिए लालायित तथा प्रयत्नशील हैं। पाठ्यपुस्तकें लिखकर, कोचिंग इन्स्टीट्यूट में पढ़ाकर तथा अन्य कार्यों (अपने कॉलेज खोलना, शेयर, सोना तथा भूखंड खरीदना और बेचना) से वे धनार्जन में संलग्न हैं। ऐसे शिक्षकों का सम्मान कम होता जा रहा है;

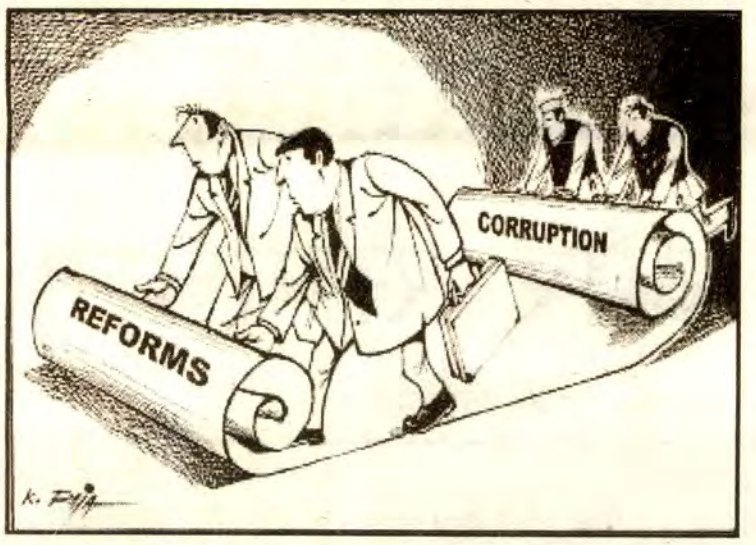

क्योंकि वे अपने धर्म से विरत हैं।

विडम्बना यह है कि उच्च शिक्षा से जुड़े शिक्षकों का वेतन सैकड़ों (रु.) में था, तब वे मेहनती, निष्ठावान और अपने विद्यार्थियों को गढ़ने के अभिलाषी होते थे। आज उनका वेतन हजारों (डेढ़ लाख तक) में है; किन्तु पढ़ाने के लिए अनिच्छुक! मेरा मानना है कि जब से वेतनमान बढ़े हैं, उनकी नैतिकता घटी है। प्राध्यापन न होने का एक और कारण है शिक्षकों के अपने संघ। किसी कुलपति या प्राचार्य में इतना साहस नहीं रह गया है कि वे कर्त्तव्यच्युत शिक्षक के प्रति कोई कार्यवाही कर सकें।

शोधकार्य में भारी भ्रष्टाचार है। यदि 'हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना' विषयक शोध प्रबन्ध पर डाक्टरेट दी जा चुकी है, तो उसके शीर्षक में हेरफेर कर अन्य शोध छात्र डिग्री पा लेता है। शोध प्रबन्ध ७००–५०० पृष्ठों के होते हैं; किन्तु उनमें कोई नई बात नहीं मिलती। शोध के नाम पर शोथ (सूजन, फैलाव, पिष्टपेषण) हो रहा है। शोध निर्देशक छात्र/छात्रा का आर्थिक और यौन शोषण तक करने में संकोच नहीं करते। हाँ अपवाद सब जगह हैं।

शोध कार्य व्यापार का रूप ले रहा है। शोध छात्र/छात्रा अपने गाइड को उसकी माँग के अनुसार मुद्रा देकर घर बैठ जाते/जाती हैं। ढाई–तीन वर्ष बाद उन्हें अपने शोध प्रबन्ध की प्रतियों पर हस्ताक्षर करने के लिए बुला लिया जाता है। शोध–निर्देशक शोध प्रबन्ध परीक्षक तथा वाइवा टपअंद्ध परीक्षक/परीक्षकों को भी साध लेता है। ऐसे पी–एच.डी. धारक बुद्धि से बौने तथा चरित्र से खोखले पाये जाते हैं। कहीं–कहीं शोध प्रबन्ध लिखने के कार्यालय हैं। वहाँ विषय के प्राध्यापक ठेके या वेतन पर रखे जाते हैं। प्रत्येक शोध–प्रबन्ध के लेखन पर कुछ और धन की प्राप्ति हो जाती है।

छात्र–छात्राओं तक ही यह कार्य सीमित नहीं है; बल्कि शिक्षा के शीर्ष आसन पर विराजने वाले भी सामग्री चुराकर अपना अकादमिक कद बढ़ाने की कुचेष्टा करते हैं। २००२ में कुमायूँ विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति पर अपने शोधपत्र (Research Paper) में दूसरे वैज्ञानिक के अच्छे–खासे अंश को शामिल करने का आरोप लगा था। कुछ वर्ष पूर्व Physical Revient D में प्रकाशित एक वैज्ञानिक के पर्चे की नकल कर Urophysics news letter में छपवाया। बलि का बकरा बनाया गया उनका शोध छात्र। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अंग्रेजी में लिखी थीसिस को हिन्दी में हूबहू अनुवाद कर पी–एच. डी. प्राप्त कर ली गई थी।

मौखिक परीक्षा भ्रष्टाचार का ज्वलन्त उदाहरण है। जिस परीक्षार्थी के एम.ए. पूर्वार्द्ध में ४० प्रतिशत अंक होते हैं, वह बाइवा में १०० से ८० अंक पाने का जुगाड़ करता है। पश्चिमी उ.प्र. के एक महाविद्यालय में मैं अर्थशास्त्र का मौखिक परीक्षक था। परीक्षार्थी से मैंने पूछा, "काला धन किसे कहते हैं?" उसने बताया, "काली भैंस।" इसके बावजूद आन्तरिक परीक्षक ने उसके पक्ष में कई तर्क देकर अच्छे अंक देने का अनुरोध किया। कहीं–कहीं कॉलेज का प्रबन्धक परीक्षार्थियों से कई हजार रु. लेकर परीक्षकों से अनुरोध कर लेता है कि वे परीक्षार्थियों से कुछ भी न पूछें और अच्छे अंक दे दें। इसके एवज में परीक्षकों को भी यदा–कदा कुछ धन मिल जाता है।

विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयों को यू.जी.सी. से अनुदान मिलता रहता है। यह अनुदान निर्माण, पुस्तकों तथा प्रयोगशाला के उपकरणों की खरीद के लिए दिया जाता है। प्राचार्या/विभागाध्यक्ष/लाइब्रेरियन उन पुस्तकों तथा उपकरणों को खरीदता है, जिस पर कमीशन अधिक मिलता है। स्तरहीन पुस्तकों से विद्यार्थी की ज्ञान–राशि में कोई वृद्धि नहीं होती। सस्ते उपकरणों से सही नतीजे नहीं निकलते। खेल–कूद की सामग्री खरीदते समय गुणवत्ता पर ध्यान नहीं दिया जाता है। यही कारण है विश्वविद्यालय से अच्छे खिलाड़ी नहीं निकल पा रहे हैं। अन्तर–विश्वविद्यालय प्रतियोगिता के लिए खिलाड़ियों के चयन में पक्षपात, भाई–भतीजावाद, क्षेत्रवाद आदि प्रभावी रहता है।

पिछले कुछ वर्षों में स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों की स्थापना बड़ी संख्या में हुई है और हो रही है। यह सर्वविदित तथ्य है कि संख्या बढ़ने से गुणवत्ता में ह्रास होता है। क्या यह हास्यास्पद नहीं है कि सरकार ऐसी संस्थाओं की संख्या भी बढ़ाए और उच्च शिक्षा में गुणवत्ता लाने की बात भी करे। १९५६ में उ.प्र. के जनपद हरदोई में एक भी डिग्री कॉलेज नहीं था। मैं स्वयं इंटर पास कर उच्च शिक्षा पाने के लिए कानपुर गया था। आज हरदोई में कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध १०० से अधिक डिग्री कॉलेज हैं। ये डिग्री कॉलेज प्रायः व्यापारियों के हैं। उन्होंने महसूस किया कि डिग्री कॉलेज खोलने का धंधा अधिक लाभदायक है। ये कॉलेज जनपद के मुख्यालय से बहुत दूर हैं। कस्बों और गाँवों में खुले ये डिग्री कॉलेज निर्धारित मानक भी पूरे नहीं करते; किन्तु विश्वविद्यालय की भेजी गई टीम नकद नेग पाकर सम्बन्धन की संस्तुति कर देता है। विद्यार्थियों के अभिभावक इस शर्त पर अपने पाल्य का एडमिशन कराते हैं कि पाल्य पढ़ने नहीं आयेगा; केवल परीक्षा देने आयेगा। प्रवेश–शुल्क प्रति विद्यार्थी हजारों रु. है। कॉलेज में न पुस्तकालय, न खेलकूद की सुविधा और न शौचालय की व्यवस्था होती है। हो भी क्यों जब विद्यार्थी आते ही नहीं।

सन्दर्भित महाविद्यालयों में परीक्षा के दौरान जमकर नकल होती है। उड़नदस्ते वहाँ तक पहुँच ही नहीं पाते और यदि पहुँच गये तो प्रबन्धक उन्हें आदर–सत्कार तथा नकद–नारायण से इतना गद्गद् कर देता है कि उड़नदस्ता 'नकलविहीन केन्द्र' की रिपोर्ट विश्वविद्यालय को भेज देता है।

स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के प्राचार्य तथा शिक्षकों (जिनके अस्तित्व या कर्म स्थली का पता नहीं) का वेतन १५००० और १०,००० के आसपास होता है। उन्हें कॉलेज चलाने तथा पढ़ाने के लिए नहीं नियुक्त किया जाता है। उनके नाम विश्वविद्यालय भेज दिए जाते हैं ताकि विश्वविद्यालय इस भ्रम में रहे कि वहाँ शिक्षक हैं और अध्यापन–कार्य होता है।

अनुदानित कॉलेजों में शिक्षक रिटायर हो गये; किन्तु उनकी जगह नहीं भरी गई। विभाग खाली हैं। पढ़ाई बाधित है। मेरा मानना है कि प्रजातंत्र और तानाशाही अज्ञान पर पनपती है। उचित शिक्षा से यदि लोगों में ज्ञान आ गया, तो उन्हें प्रलोभित या भ्रमित कर उनका मत नहीं पाय जा सकता। समय की माँग है कि उच्च शिक्षा ऐसे युवक पैदा करे, जिनमें कृष्ण की विचारवान प्रज्ञा और अर्जुन की व्यावहारिक दक्षता हो।

हिन्दू अस्तित्व, संकट और समाधान

✍ प्रो० ए०पी० सारस्वत

(पिछले अंक का शेष)

समाधान

न्याय, प्रशासन, सेना और पुलिस को प्रथम लक्ष्य बनाकर पूरे समाज को ही शिक्षित करने की आवश्यकता है। हिन्दू संगठन को चाहिये कि हिन्दुओं को सतर्क करने के लिये एक विशेष टीवी चैनल की व्यवस्था कर हिन्दू धर्म पर इस्लाम और ईसाइयत के खतरों के प्रति हिन्दू जनता को सतर्क करें। आज धामिक चैनलों पर सिर्फ भजन–कीर्तन और पौराणिक कथाएं होती हैं।

मुसलमान और ईसाई अपने मजहबों के मौलिक चरित्र से ही साम्प्रदायिक और राजनीतिक हैं और हिन्दू धर्म के मौलिक चरित्र से ही असाम्प्रदायिक और अराजनीतिक हैं, लेकिन अधकचरे या अंधस्वार्थी लोग उल्टा ही कहते हैं। अब उनके कहने की चिन्ता छोड़कर हिन्दू समाज को तब तक धार्मिक और राजनीतिक रूप देना होगा जब तक इस्लाम और ईसाइयत के साम्प्रदायिक, राजनीतिक, विस्तारवादी और आतंकवादी आचरण को नष्ट न कर दिया जाय।

पूरे समाज के लोगों का बिना भेदभाव के नियमित एक स्थान पर दैनिक, अर्द्ध–साप्ताहिक या साप्ताहिक जमाव हो, जिसमें बालक, युवा, महिलाएं और पुरुष सभी शामिल हों। धार्मिक आधार पर एकत्रित होने, प्रार्थना, योग, ध्यान आदि विधियों सहित नियमित धर्म–समीक्षा, सामाजिक सहयोग एवं कल्याण आदि विषयों पर प्रवचन, विचार–विमर्श, कार्य–योजना आदि की तुरंत शुरुआत की आवश्यकता है। सामाजिक सक्रियता बढ़ाने की आवश्यकता है।

"हिन्दू रक्षा अभियान' की शुरुआत हो। हिन्दुओं के सैनिकीकरण का काम करना होगा, उसे लड़ाकू बनाना होगा। हर अन्याय का संघर्षपूर्ण विरोध करने की प्रवृत्ति विकसित करनी पड़ेगी। "आक्रमण और बर्बर शक्ति को केवल प्रचण्ड आक्रमण और घोरतम बर्बर शक्ति के द्वारा ही पराजित किया जा सकता है। "वीर सावरकर

हिन्दू समाज को एकत्रित करने की व्यवस्था हजारों बीमारियों की एक औषधि है। टोला, मुहल्ला, गाँव–गाँव और शहर–शहर में संगठन बनाना और नियमित एकत्रीकरण की व्यवस्था हो। सामाजिक मेल–जोल नहीं हो पाने के कारण, कोई संयुक्त वार्ता या कार्यक्रम नहीं हो पाता है। हिन्दू का राजनीतिकरण और राजनीति का हिन्दूकरण हो। हिन्दू चुनाव में टैक्टिक मतदान करें।

कुछ मुसलमान निश्चित रूप से देशभक्त हैं, किन्तु इनकी संख्या सीमित और इस्लामी समाज में उपेक्षित की है। ये अपने सद्विचारों के साथ सिमटे और सहते हुए जीवन गुजारते हैं। मुस्लिम आचरण और सोच की मुख्य धारा में हस्तक्षेप करने की इनमें शक्ति नहीं होती है। जो हस्तक्षेप की हल्की–फुल्की भी चेष्टा करता है उसके विरुद्ध फतवे जारी की उसे इस्लामी समाज का अपराधी घोषित कर दिया जाता है। मजहबी उन्माद के तूफान में इनका कहीं अता–पता नहीं हो पाता है। इनकी लाचारी को देखते हुए इनसे किसी स्वस्थ परिवर्तन की उम्मीद करना व्यर्थ है। सम्पूर्ण हिन्दू समुदाय को इस्लाम के खतरे की पूर्ण जानकारी, उनसे निपटने के व्यापक उपाय और कार्यक्रम, शिक्षा अभियान शुरु किया जाये।

इस्लाम के मौलिक चरित्र की जानकारी सभी हिन्दुओं को देना बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण काम है– " इस्लाम के निर्देशों के अनुसार देश–विदेश के सभी मुसलमान एक राष्ट्र के अंग होते हैं। उनका संयुक्त प्रयास काफिर व्यक्ति, समुदाय या राष्ट्र को पराजित करना होता है। काफिर के साथ धोखाबाजी उनके पैगम्बर द्वारा निर्देशित विधान है जो हर मुसलमान के लिए पवित्र आचरण है।" आज के लगभग सभी मुसलमान अपने ही वंश, जाति और धर्म के लोग हैं। भय, दबाव में उनको मुसलमान बनना पड़ा। हिन्दू समाज आरम्भ में मुसलमान बने अपने भाइयों को पुनः अपना लेता था। बाद में धीरे–धीरे आक्रमणकारियों दबाव के कारण हिन्दुओं ने उन्हें अपनाना बंद कर दिया जो आगे पुनः शुरू नहीं किया जा सका और रूढ़ि का रूप ग्रहण कर लिया, इस भूल को सुधार कर उनकी 'घर–वापिसी' बहुत आवश्यक है।

मुस्लिम–ईसाई धर्मान्तरितों को शुद्धिकरण द्वारा अपने धर्म में पुनः वापस लाने का कार्यक्रम सभी कार्यक्रमों से ज्यादा महत्वपूर्ण है। हिन्दू संगठन और शिक्षण के लिए समर्पित टोलियों में शुद्धिकरण कार्यक्रम की प्रधानता रहनी चाहिए।

हिन्दू युवाओं को मुस्लिम व ईसाई लड़कियों से शादी करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिये, ऐसे युवाओं को हिन्दू समाज सर्वोच्च सम्मान दे। उन्हें श्रेष्ठता की विशिष्ट श्रेणी में रखे और आर्थिक सहयोग दे।

परिवार नियोजन को मुसलमानों सहित सभी पर अनिवार्य रूप से लागू किया जाये। २ बच्चों से अधिक वाले परिवार को मिल रहीं नागरिक सुविधाओं में कटौती की जाए। मुस्लिमों को हिन्दू समाज से कोई आर्थिक लाभ न मिले इसका सदा ख्याल रखें।

किसी भी समाज की अवनति या विनाश का कारण बाहरी कम, आन्तरिक अधिक होता है। हम अतीत के अपने पूर्वजों के महानतम गौरव की उपलब्धियों और उससे पतित होकर आज की विकृत स्थिति तक का सिंहावलोकन करें, उनके कारणों को ढूंढे ताकि उनसे शिक्षा लेकर अपनी संतानों के जीवन को सुरक्षित कर सकें।

हिन्दुओं के प्राचीनतम धर्मग्रन्थ वेदों में जातिभेद और छुआछूत की कोई चर्चा नहीं हैं महाभारत ('गीता' जिसका एक अध्याय है) के अनुसार भी वर्णों में कोई विशेषता या भेद नहीं है। सभी हिन्दू पर्व–त्योहारों, उत्सवों आदि में बिना भेदभाव के सबसे मिलने–जुलने को प्राथमिकता देनी चाहिए, इससे समरसता पैदा होती है। मुस्लिमों, विशेषकर उन मुसलमानों, जो आज भी अपने नाम के साथ 'हिन्दू गोत्र' लगाते हैं, को मुस्लिम आक्रमणों के इतिहास से अवगत करायें। उन्हें जानकारी दें कि किस प्रकार उनके हिन्दू पूर्वजों को मुस्लिम हमलावरों के अत्याचार को झेल कर मुसलमान बनना पड़ा था।

प्रत्येक हिन्दू को निष्क्रियता त्याग कर अन्याय के विरुद्ध सक्रिय प्रतिरोध के लिए अभ्यस्त होना होगा, क्योंकि कहा गया है–"दुर्जनों की दुर्जनता उतनी हानिकारक नहीं होती है जितनी सज्जनों की अन्यमनस्कता।"

हिन्दुओं में अंध होड़ लगी है अपने बच्चों को ईसाई स्कूलों में पढ़ाने

की। वे फीस के रूप में हिन्दू समाज से भारी धन वसूल करते हैं, उस धन का इस्तेमाल अन्ततः हिन्दुओं के धर्मान्तरण में होता है। हिन्दुओं को अपने विद्यालयों की संख्या बढ़ाकर उन्हें वक्त की माँग के अनुरूप बनाना चाहिए और अपने बच्चों को उनमें ही पढ़ाना चाहिए।

हिन्दू, सार्वजनिक पूजा एवं अन्य सामाजिक गतिविधियों में धन की फिजूलखर्ची रोक कर उस बचत का उपयोग सभागार बनने में करें, जहाँ एकसाथ हजारों की संख्या में हिन्दू एकत्रित हो सकें और योग–ध्यान सहित हिन्दू समाज की रक्षा के लिए आवश्यक गतिविधियों को संचालित कर सकें। हर हिन्दू महिला–पुरुष नियमित रूप से हिन्दू–हित के लिए कुछ न कुछ त्याग करे। हिन्दू रक्षा मद में किया जाने वाला खर्च अपने अस्तित्व रक्षा के लिए किया जाने वाला आवश्यक खर्च है, जिसे करना हर हिन्दू का परम कर्तव्य है।

प्रत्येक हिन्दू यह संकल्प ले कि प्रतिमाह वे अपनी कमाई का एक अंश हिन्दू हितकारी संस्थाओं को अवश्य दान दिया करेंगे। मंदिरों, मठों, आश्रमों आदि को दान न देकर हिन्दू संस्थाओं को दान दिया करें, विशेष रूप से वनवासी कल्याण कार्यक्रमों को चलाने वाली संस्थाओं और मुस्लिम जेहाद का मुकाबला के लिए कार्यक्रम चलाने वाली संस्थाओं को।

हिन्दू शिक्षण के लिए पाठ्य सामग्रियों को प्रकाशित करने में लगी संस्थाओं को भी खुल कर दान देना चाहिए ताकि वे सस्ती पुस्तकें प्रकाशित कर सकें। आवश्यक जानकारी देने वाली पुस्तकों का निःशुल्क वितरण करें।

सारे विश्व में दुर्बल लोगों के दर्शन को सुनने को कोई तैयार नहीं है, चाहे वह दर्शन कितना ही महान क्यों न हो। उच्च संस्कृतियाँ जो अपनी रक्षा का उपाय नहीं करतीं, बर्बर संस्कृतियों द्वारा मिटा दी जाती हैं। अतः हिन्दू समाज और हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए हिन्दू शिक्षण, प्रशिक्षण, संगठन और शक्ति संचय को अपनाते हुए 'जैसे को तैसा' के सिद्धांत को व्यावहारिक रूप देने पर जोर दें।

समान नागरिक संहिता

रूस के चेचन्या प्रांत में भी लम्बे समय से मुसलमानों द्वारा जिहादी युद्ध चलाया जा रहा है। इस संदर्भ में रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमिर पुतिन का ४ फरवरी २०१३ के रूस के संसद 'ड्यूमा' में दिया गया भाषण पढ़ने लायक है–

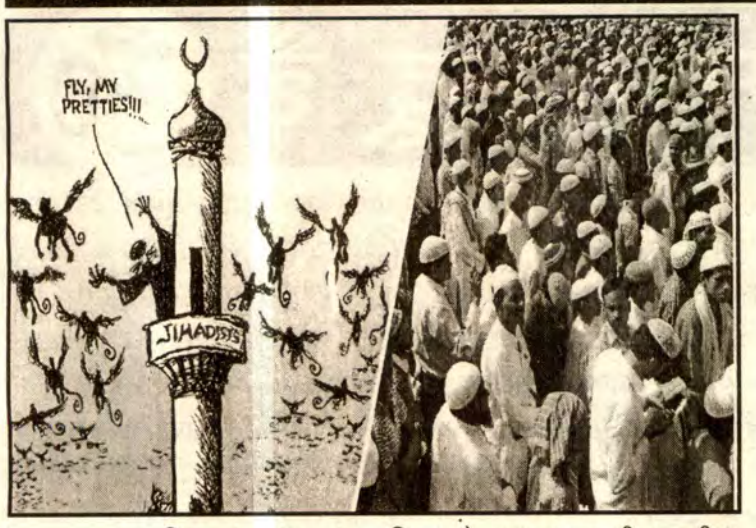

धार्मिक आस्था पर आघात की घृणित राजनीति

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

भारतीय संस्कृति को नष्ट–भ्रष्ट करके भूमि पुत्र बहुसंख्यक हिंदुओं की आस्थाओं पर निरंतर प्रहार करते रहने की मुगलकालीन परंपरा अभी जीवित है। आज केंद्र में राष्ट्रवादी भाजपानीत राजग सरकार के सशक्त शासन में भी देशद्रोहियों व भारतविरोधियों के षडयंत्रो पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। यह कितना विचित्र है कि जिस कांग्रेस ने आरंभ में गौवंश दो बैलो की जोड़ी व गाय–बछड़े के चुनाव चिन्ह के आधार पर भी भारतीय संस्कृति का भरपूर लाभ उठाते हुए बहुसंख्यक हिंदुओं को लुभाकर दशकों देश पर शासन किया वहीं आज सत्ता से बाहर होने पर उन मान बिंदुओं के प्रति भी निरंकुश हो रही है। सत्ता ने की पीड़ा में कांग्रेसजनों के निरन्तर असन्तुलित व्यवहार से होने वाली छटपटाहट अनेक अवसरों पर उनकी अराष्ट्रीय भावनाओं व अपरिपक्वता के दुखद संकेत कराती है। जिसके परिणामस्वरुप केरल में कांग्रेसियों के दुःसाहस ने गाय के बछड़े को सार्वजनिक रुप से काट कर उसका वितरण करके समस्त भारतवासियों को आक्रोशित कर दिया है।

क्या खाते है यह व्यक्तिगत है परंतु क्या खा रहें है इसका प्रदर्शन करने का क्या हेतू है? क्या राष्ट्रवादियों की भावनाओं को भडका कर सामाजिक व साम्प्रदायिक सौहार्द को बिगाड़ कर अराजकता फैलाना और साम्प्रदायिक दंगे करवाकर निर्दोष लोगों के जान–माल के साथ साथ राष्ट्रीय सम्पत्तियों हो हानि पहुँचाना उचित है? इस नृशस घटना ने बहुसंख्यक हिन्दुओं के मान–बिंदुओं पर प्रहार करके जिहादी संस्कृति के दुःसाहस को और बढ़ाया है।

हमारा केंद्र व केरल की सरकार से विनम्र अनुरोध है कि इस दुर्दान्त घटना में सम्मलित सभी आरोपियों को अविलम्ब कठोर वैधानिक कार्यवाही करके उचित दंड दिया जाय। साथ ही यह सुनिश्चित किया जाये कि इस प्रकार से केवल हिंदुओं को अपमानित करने और उनको ठेस पहुँचाने के लिये उनकी संस्कृति व आस्थाओं पर प्रहार करने वालों पर भविष्य में भी कठोर कार्यवाही की जायेगी। ध्यान रहें केंद्र सरकार ने २३ मई को पशु क्रूरता निवारण कानून के अंतर्गत गौवंश, भैस, ऊंट आदि पशुओं के अनावश्यक वध को रोकने और बाजार में इन पशुओ की क्रय–विक्रय को नियमित करने की अधिसूचना जारी की थी। परंतु धर्मद्रोहियों ने हम हिन्दू धर्मावलंबियों को पीड़ा पहुँचाने के लिये विशेष रुप से गौवंश काटने और उसके मांस के भक्षण का खुला प्रदर्शन किया है। अतः इस मानसिकता का पोषण करके उसका सशक्तिकरण करने वाली अमानवीय प्रवृतियों को जब तक कुचला नही जायेगा तब तक माँ भारती पर हो रहें ऐसे आघातो को नियंत्रित नही किया जा सकता।

यह ठीक है कि हमारे संविधान का अनुच्छेद १६ (१ जी) के अनुसार सभी नागरिकों को कोई वृत्ति, उपजीविका, व्यापार या कारोबार करने का अधिकार दिया गया है। परंतु इसको नियंत्रित करने की व्यवस्था भी अनुच्छेद १६ (६) में स्पष्ट कर दी गई है। जिसके अनुसार यह स्पष्ट है कि अनुच्छेद १६ (१जी) में दिये गये अधिकारों का दुरुपयोग न हो सके इसके लिये केंद्र व राज्य सरकार को उचित कानून बनाने का अधिकार प्राप्त है। अतः जिस प्रकार नागरिकों को व्यापार चुनना मौलिक अधिकार है तो उसी प्रकार सरकार का यह दायित्व व अधिकार है कि सभी बाजारो को विनियमित करें और रखें। यहां यह उल्लेख भी आवश्यक है कि पशु मेले में पशुओं के क्रय–विक्रय में अधिकाँश पशुओ को कत्लगाह, बूचड़खाने व स्लाटर हाउस में कटने के लिये ही भेजा जाता है। जबकि इन मेलों में कृषि कार्यो के लिये पशुओं के क्रय–विक्रय की मान्यता होती है। इसके अतिरिक्त यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य है कि भारत–बंग्ला देश की सीमाओं पर गौवंश की तस्करी का वर्षो पुराने आपराधिक कृत्यों में अनेक अपराधी व आतंकवादी निरन्तर सक्रिय रहते है। एक समाचार के अनुसार भारतीय सीमा सुरक्षा बलों ने भारत–बंग्ला देश सीमा से केवल वर्ष २०१५ में ही लगभग एक लाख पशु मुक्त कराये थे जिसमें अधिकांश गाय, बैल व बछड़े थे। उस समय भारत व बंग्लादेश के ४०० तस्कर भी पकडे गये थे। परिणामस्वरुप बंग्ला देश में गाय के मूल्यों में ४० प्रतिशत की वृद्धि हुई जिससे उनके चमड़ा उद्योग में १५ प्रतिशत व गौमांस के अंतर्राष्ट्रीय बाजार में ७५ प्रतिशत की गिरावट हुई थी।

देश में प्रतिवर्ष १४ जनवरी से २६ जनवरी तक पशु कल्याण पखवाड़ा मनाया जाता है, परंतु संभवतः अधिकांश लोगों को यह ज्ञात ही न होगा और न ही उन्होंने कभी सुना व देखा होगा? बहुत से समाजसेवी समय समय पर यह मांग भी करते रहें है कि मानवाधिकारों की तरह पशु अधिकारों को भी नियोजित किया जाये। भारतीय सेना ने भी अपने डॉग–स्क्वायड के डाग सदस्यों को अवकाश देने के बाद न मारने का कुछ वर्ष पूर्व निश्चय किया था। इस संबंध में अक्टूबर २०१५ में राष्ट्रीय सहारा में प्रकाशित एक लेख के अनुसार एक चौकाने वाला प्रसंग है कि स्पेन के एक क्षेत्र कस्बे टिग्योरास डि वैले में एक विचित्र घटना हुई जिसमें उस क्षेत्र में वोटिंग करवा कर बहुमत से वहां के लोगों ने निश्चय किया कि कुत्तो

शेष पृष्ठ 11 पर

व्रतोत्सव प्रदर्शिका

भाद्रपद कृष्णपक्ष

व्रत, पर्व, त्यौहार (उत्सव)	तिथि	वार	दिनाँक
❖ इष्टिः, पंचकप्रारम्भ, १६:१२, प्रवणतपपूर्णजैन, अशून्यशयनव्रतपूर्ण	१	मंगलवार	०८.०८.२०१७
❖ भारत क्रान्तिदिवस, भीमचण्डी विंध्याजयन्ती	२	बुधवार	०९.०८.२०१७
❖ भद्रा १२:३८ से २४३४ तक, सातूडीतीज व्रत, कज्जलीतृतीया व्रत, प्रतियोगिता (बि०)	३	वीरवार	१०.०८.२०१७
❖ बहुलाचतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २१:३०	४	शुक्रवार	११.०८.२०१७
❖ पंचक समाप्त २६:५०, रक्षापंचमी, चन्दनषष्ठरव्रत, चन्द्रोदय २२:०६	५	शनिवार	१२.०८.२०१७
❖ भद्रा २१:३२ से, ललहीछटि पूजागोरखपुर राँधनछटगुज, र०यो०, स० सि०यो० २६:०३ तक	६	रविवार	१३.०८.२०१७
❖ भद्रा ०८:३६ तक, द्रौणमेलादनकौर, श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत स्मार्त, चन्द्रोदय २३:३१, कालाष्टमी,	७/८	सोमवार	१४.०८.२०१७
❖ श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत वैष्णवोत्सवः, चन्द्रोदय २४:१७, गुरू जम्भेश्वरजयन्ती, विश्नोई समाज, सन्तज्ञानेश्वरजयन्ती, आद्यकालीजयन्ती, स्वतन्त्रतादिवस ७१ वां ध्वजारोहण, स० सि०, यो० २६:३० तक	८	मंगलवार	१५.०८.२०१७
❖ भद्रा २६:०० से, गोगा नवमीं, नन्दोत्सव (मेला नन्दगाँव), मघासिंह में सूर्य २४:४७ संक्रान्ति मु० ४५, बड़ व सौर भाद्र पद प्रारम्भ, चन्द्र–सूर्य–स्त्री–पुरुष वर्षा वाहन मेष, रोहिणी व्रत स० सि० यो०	९	बुधवार	१६.०८.२०१७
❖ भद्रा १२:४३ तक, तेजी मंदी सूचकांक २६८६, मनसापूजा समाप्त	१०	वीरवार	१७.०८.२०१७
❖ अजाएकादशीव्रत सर्वेषाम, स०सि०यो० २१:०२ से	११	शुक्रवार	१८.०८.२०१७
❖ भद्रा २८:३८ से, गोवत्स पूजा, बछबारस, पर्युषणपर्व जैन प्रा० प्रदोषव्रत, कलियुगादिः, त्रयोदशीक्षयः	१२/१३	शनिवार	१९.०८.२०१७
❖ भद्रा १५:२४ तक, अघोराचौदस, मासशिवरात्रि कैलाशयात्रारम्भः, स०सि०यो० १७:२१ तक, छटी पूजन	१४	रविवार	२०.०८.२०१७
❖ अन्वाधान, पिठौरीअमावस, सोमवतीअमावस कुशोत्पाटिनी अमावस, सतीपूजा, अग्रवंशे, लोहार्गलयात्रा, कल्पसूत्र पाठ (जैन) मेला सुथरेशाह (दिल्ली),	३०	सोमवार	२१.०८.२०१७

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,
श्री नरेन्द्र मोदी जी,
माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार।
साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली-११००११

विषय : कूटनीतिक सीमाएं लांघता चीन।

महोदय,

लेखक श्री दिव्य कुमार सोती के समाचार पत्रों में छपे आलेख से यह स्पष्ट है कि जिस प्रकार कोई ऐसी वस्तु नहीं जो अग्निदेवता को भक्षण के लिए दी जाए और अग्निदेवता उसको स्वाहा न कर दें, उसी प्रकार यद्यपि चीन देवता तो नहीं है किन्तु ऐसा दैत्य है जिसके उदर में जितना डालेंगे वह और अधिक की माँग करता रहेगा। इसलिए अब यह बहुत आवश्यक हो गया है कि चीन से डरा न जाए और उसको दर्पण दिखाया जाए। भावार्थ यह है कि हमारे दुर्बल नेतृत्व के कारण तिब्बत चीन के उदर में चला गया और हम देखते रहे, साथ–साथ हमारी ३६,०००+५००० वर्ग कि.मी. भूमि चीन ने हड़प ली।

इसलिए आपसे अनुरोध है कि तिब्बत नीति पर पुनर्विचार की घोषणा करते हुए तिब्बत को स्वतंत्र देश की मान्यता दे दी जाए ताकि चीन को जबर्दस्त धक्का लगे तथा चीन का घटिया माल देश में आने से रोक दिया जाए।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक) राष्ट्रीय अध्यक्ष | (मुन्ना कुमार शर्मा) राष्ट्रीय महासचिव | (वीरेश त्यागी) राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

प्रतिष्ठा में,
श्री प्रकाश जावड़ेकर जी,
माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार
शास्त्री भवन, डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

विषय : अम्बेडकर विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा हिंदी में कराने की मांग।

महोदय,

यह हठधर्मी और दासता की पराकाष्ठा है कि दिल्ली के अम्बेडकर विश्वविद्यालय में स्नातक, स्नातकोत्तर, एम् फिल आदि कक्षाओं में भर्ती के लिए परीक्षा का माध्यम केवल अंग्रेजी है और पढ़ाई भी अंग्रेजी में होती है। समाचार के अनुसार हिंदी माध्यम में पढ़े हुए और पिछड़े वर्गों के छात्रों को अंग्रेजी माध्यम के कारण विश्वविद्यालय में प्रवेश नहीं मिलता है। विश्वविद्यालय के प्राधिकारियों को ज्ञापन भी दिए गए किन्तु अनसुने किए जा रहे हैं। राष्ट्रपति जी के आदेशों के अनुसार हिंदी माध्यम में प्रवेश परीक्षा और हिंदी माध्यम में पढ़ाई का होना अनिवार्य है।

कृपया शीघ्र अम्बेडकर विश्वविद्यालय को निर्णायक आदेश देने का कष्ट करें। इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक) राष्ट्रीय अध्यक्ष | (मुन्ना कुमार शर्मा) राष्ट्रीय महासचिव | (वीरेश त्यागी) राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

शेष पृष्ठ 6 का **विडम्बना आस्ट्रेलिया में.....**

पले–बढ़े, इन भारत के नागरिकों में से किसी के भी मन, आत्मा, बुद्धि में यह भाव नहीं जागा कि अपनी राष्ट्रभाषा/मातृभाषा में भी लेखन व संपादन करना चाहिए जिससे हमारी भाषा भी समृद्ध होती रहे।..... क्या हम केवल अंग्रेजी भाषा के भंडार को ही भरते जायें? और अपनी महान भाषा के भंडार को खाली रखकर बिल्कुल सूखने दें? जिन्होंने हमारी भावी पीढ़ी से उनकी भाषा ही छीनकर उन्हें गूंगा बना दिया।..... आम जन के मन से धन से भारी वेतन पाने वाले अधिकारी आम जन के बारे में भी कुछ सोचें? यदि आप राष्ट्रभाषा में भी लेखन का संकल्प लें तो आप राष्ट्र ऋण से उऋण हो सकते हैं।.....''

क्या इन अहिन्दी भाषी महापुरुषों लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, स्वामी दयानन्द, लाला लाजपत राय, अमर शहीद भगत सिंह, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, बिनोबा भावे, रवीन्द्र नाथ टैगोर, गोपालस्वामी आयंगार, सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर ने राष्ट्रीय एकता हेतु हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया था। विदेश में हिन्दी का प्रचार–प्रसार और स्वदेश में अंग्रेजी को बन पाता। संभवतः इसीलिए सेनानी राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त को लिखना पड़ा इंगलिश को भाषा/अवश्य बना लेते हैं आप/तो उस गोरी सत्ता ने ही/किया कौन सा पाप इसी भावना पर अमर बलिदानी अशफाक उल्ला खाँ की रेखांकित पंक्तियाँ अपने देशवासियों के कृतित्व को उजागर कर रही हैं। 'सुनायें गम की किसे कहानी, हमें तो अपने सता रहे हैं, हमेशा वो सुबहो–शाम दिल पर, सितम के खंजर चला रहे हैं, न कोई इंगलिश, न कोई जर्मन, न कोई रशियन न कोई टर्की, मिटाने वाले हैं अपने हिन्दी, जो आज हमको मिटा रहे हैं।

हम मनीषी सेवक वात्सायन की प्रस्तुत पंक्तियों पर आधारित अंग्रेजी 'आया' को माँ नहीं बनने का संकल्प लेंगे।

जो होता है होने दो, यह पौरुषहीन कथन है,
जो हम चाहेंगे होगा, इन शब्दों में जीवन है।

शेष पृष्ठ 1 का **स्कूलों में फंसे ६० बच्चे.....**

लिए मोबाइल बुलेट प्रूफ बंकर वाहनों का इस्तेमाल किया गया। राजौरी के जिलाधिकारी शाहिद इकबाल ने संवाददाताओं को दिए बयान में कहा कि उसी इलाके के सेर स्कूल में फंसे ५० विद्यार्थियों को भी सुरक्षित रूप से बाहर निकाल लिया गया। अधिकारियों ने सोमवार को राजौरी जिले में नियंत्रण रेखा के पास स्थित १६ स्कूलों को बंद कर दिया था। पाकिस्तानी सेना की ओर से जारी गोलाबारी व गोलीबारी के बाद अब अन्य स्कूलों को भी बंद किया जा सकता है। जम्मू–कश्मीर के राजौरी जिले के नौशेरा सेक्टर में पाकिस्तान ने फिर सीजफायर का उल्लंघन करते हुए फायरिंग की। पाकिस्तान की की तरफ हुई इस फायरिंग के चलते भारतीय सीमा में ४० बच्चे स्कूल में फंस गए थे। ये स्कूल नौशेरा के झांगर इलाके में बताया जा रहा है। पाकिस्तान की तरफ से १ बजकर ५० मिनट पर फायरिंग हुई। पाकिस्तानी सेना ने राजौरी और पुंछ सेक्टर में मोर्टार के गोले दागे और गोलीबारी करके संघर्ष विराम का उल्लंघन किया जिसके बाद भारतीय सैनिकों ने कड़ी जवाबी कार्रवाई की, रक्षा प्रवक्ता ने यह जानकारी दी। राजौरी के उपायुक्त शाहिद इकबाल चौधरी ने बताया कि अधिकारियों ने चेतावनी जारी की है और क्षेत्र के निवासियों को घर के अंदर रहने की सलाह दी है। इसके अलावा समन्वय के लिये क्षेत्रीय अधिकारियों को नियुक्त किया गया है। उन्होंने बताया कि पाकिस्तानी सेना की गोलीबारी से राजौरी और पुंछ सेक्टर के पंजग्रेन, राजधानी और नैका गांव की करीब ४५००–५००० की आबादी प्रभावित हुई है। रक्षा प्रवक्ता ने कहा पाकिस्तानी सेना ने नियंत्रण रेखा पर राजौरी एवं पुंछ सेक्टर के भीमबर गली में बगैर किसी उकसावे के सुबह करीब पौने सात बजे छोटे एवं स्वाचालित हथियारों से अधाधुंध गोलीबारी की और मोर्टार के गोले दागने शुरू कर दिये। उन्होंने बताया कि भारतीय सैनिक पाकिस्तानी गोलीबारी का कड़ा जवाब दे रहे हैं। उल्लेखनीय है कि जम्मू कश्मीर में नियंत्रण रेखा पर राजौरी, पुंछ और बारामुला जिले में कल पाकिस्तानी सेना की गोलीबारी एवं मोर्टार दागने से सेना के एक जवान और नौ साल की एक लड़की की मौत हो गयी थी, जबकि चार अन्य लोग घायल हो गये थे। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि पाकिस्तान को जब तक करारा जवाब नहीं मिलेगा, तब तक पाकिस्तान की आंतकी गतिविधियां नहीं रूकेगी। भारत सरकार पाकिस्तान पर कड़ी कार्रवाई करे।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 5 का

रक्षा बंधन सुरक्षा और बिना.....

नए कपड़े पहनते हैं। महिलाएं और लड़कियां अपनी हथेलियों पर मेहंदी लगवाती हैं। मिठाइयां बनती हैं और हर घर में एक कार्निवाल–सी तैयारी होती है। घर के देवी–देवताओं की पूजा करने के बाद बहनें अपने भाई की आरती उतारती हैं। तिलक और चावल माथे पर लगाती हैं। बदले में भाई जिंदगीभर सुरक्षा का वचन देने के साथ ही उपहार भी बहनों को देते हैं।

आजादी के बाद रविंद्र नाथ ठाकुर ने शांति निकेतन में राखी महोत्सव का आयोजन किया। वे पूरे विश्व में बंधुत्व और सह–अस्तित्व की भावना जगाना चाहते थे। यहां राखी मानवीय संबंधों में सद्भाव का प्रतीक है।

सशस्त्र सेनाओं को भी इस दिन नहीं भूलाया जा सकता। वर्दी वाले यह जवान हमारी सीमाओं की रक्षा करते हैं ताकि हम यहां आराम से सुरक्षित रह सके। इस दिन सीमाई इलाकों के पास रहने वाले लोग बड़े पैमाने पर सशस्त्र सेनाओं से मिलने जाते हैं। सिपाहियों की कलाइयों पर राखी बांधते हैं।

राखी की आधुनिक अवधारणा

रक्षा बंधन अब खून के रिश्तों तक सीमित नहीं है, जो भाई और बहन के बीच ही रहे। आज, बहनें भी एक–दूसरे को राखी बांधकर एक–दूसरे को जीवनभर प्रेम और रक्षा करने का वचन देती हैं। दोस्त भी इस त्योहार को मनाने लगे हैं। आपसी रिश्ते को मजबूती देने और एक–दूसरे के प्रति अपने अहसास बताने के लिए। आज रक्षा बंधन एक व्यापक नजरिये को प्रस्तुत करता है। जीवनभर नैतिक, सांस्कृतिक और अध्यात्मिक मूल्य भी इसमें शामिल है। कोई भी रिश्ता किसी खास दिन या उत्सव का मोहताज नहीं होता। लेकिन त्योहार और खास दिन ही हमारी रोजमर्रा की बोरियत भरी जिंदगी से दूर करते हुए हमें आपसी रिश्तों और प्रेम के प्रतीक इन त्योहारों को मनाने को प्रेरित करते हैं। हम यहां हर एक को विश्व बंधुत्व और प्रेम को अभिव्यक्त करना चाहते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-
सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....150/- रुपये
द्विवार्षिक.....300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।
पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 8 का

हिन्दू अस्तित्व, संकट....

"रूस में रूसी रहते हैं, कोई भी अल्पसंख्यक समुदाय यदि रूस में रहना चाहता है, रूस में काम करने की उसकी इच्छा है, तो उसे रूसियों के समान ही बोलना होगा और रूस के कानून का आदर करना होगा। उन्हें शरीयत का कानून पसंद है तो हमारी उनसे विनती है कि वे जहाँ वह कानून लागू है, उस स्थान पर चले जायें। रूस को अल्पसंख्यकों की आवश्यकता नहीं, अल्पसंख्यकों को रूस की आवश्यकता है। हम उन्हें कोई विशेषाधिकार नहीं देंगे या उनकी इच्छा के अनुरूप कानून नहीं बनायेंगे, फिर वे भेदभाव के नाम से कितना ही शोर क्यों न मचायें।" -राष्ट्रदेव, १२-०७-१३

बांग्लादेश की लेखिका 'तस्लीमा नसरीन' के अनुसार–**'इस्लाम' १४०० वर्ष पहले अस्तित्व में आया, तबसे हमारा आधुनिक समाज बहुत आगे बढ़ चुका है, लोग उसी पुस्तक का पालन करते हुए नहीं रह सकते हैं। मेरी दृष्टि से वह पुस्तक अब और अधिक समय तक हमारे वर्तमान समय के अनुकूल नहीं है, इसलिए मैं नहीं समझती कि कि किसी भी सभ्य देश में इस्लामी नियमों को कानूनी दर्जे के रूप में चालू रहने दिया जाए। हमें आधुनिक एवं पंथनिरपेक्ष (सैक्यूलर) कानूनों का पालन करना चाहिए, जोकि किसी से भेदभाव नहीं करते हों। वे एक समान सिविल संहिता (सिविल कोड) के रूप में हों, जो सबके लिए समान हों।**

(शेष अगले अंक में)

शेष पृष्ठ 9 का

धार्मिक आस्था पर.....

व बिल्लियों आदि पालतु पशुओं को भी गैर इंसानी नागरिक का स्टेटस दिया जाय। फिर वहां पशु अधिकार कानून में यह स्पष्ट किया गया कि गैर इंसानी नागरिकों को अपनी मौज–मस्ती के लिए तंग करना व तड़पाने का इंसानी नागरिकों को कोई अधिकार नही है और उस इंसान को दंडित भी किया जायेगा जो इन पशुओं को यातना देगा। यहां यह उल्लेख इसलिए आवश्यक है कि जब पालतू पशुओं के प्रति इतनी उदारता व सहिष्णुता मनुष्य में है तो फिर हिन्दुओं की धार्मिक आस्था से जुड़े गौवंश के प्रति सम्मान तो सभी को रखना ही चाहिये। वर्षो से गौवध को प्रतिबंधित करने के अनेक छोटे–बड़े आंदोलन किये जाते आ रहें है और कुछ राज्यों में इसके लिये कानून बने भी है, परंतु राजनैतिक विमर्श बार बार असफल होता रहा है।

केंद्र सरकार के इस निर्णय का तमिलनाडु, केरल व पश्चिम बंगाल की सरकारों के साथ साथ देशविरोधी तत्वों ने भी विरोध किया है, जबकि राज्य सरकारें इस पर अपने विधि–विधान में आवश्यक संशोधन करने के लिए स्वतंत्र है। लेकिन गऊ माता को ईश्वर तुल्य मानने वाले हिन्दू बहुल समाज की मर्यादाओं को अपमानित करके उनके उत्पीडन से एक विशेष वर्ग (मुसलमानों) को प्रसन्न करने की ओछी राजनीति ने सेक्युलर कहें जाने वाले समाज को जकड़ लिया है। जिससे राष्ट्रहित सर्वोपरि की भावना का सर्वथा अभाव होता जा रहा है। इन समस्त आग्रहों, दुराग्रहों व पूर्वाग्रहों के बीच यह सुखद है कि अनेक मुस्लिम नेताओं ने गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने व गौवध को प्रतिबंधित करने की मांग उठायी है और उसका समर्थन करने का भी निश्चय किया है।

शेष पृष्ठ 1 का

देशद्रोही याकूब मेमन का समर्थन.....

गांधी ने देश की स्वतंत्रता के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, चंद्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियों की फांसी को रोकने का कोई प्रयास नहीं किया, वहीं दूसरी ओर छोटे गांधी गोपाल कृष्ण गांधी ने देश के टुकड़े करने का षड्यंत्र रचने वाले देशद्रोही व देश के दुश्मन याकूब मेमन की फांसी को रोकने का पूरा प्रयास किया। यह दोनों गांधी की दोहरी मानसिकता व सिद्धांत हीनता है।

दिनांक 09 अगस्त से 15 अगस्त 2017 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
चतुर्थी	11 अगस्त	शुक्रवार
बलराम जयंती	13 अगस्त	रविवार
अखण्ड भारत दिवस	14 अगस्त	सोमवार
श्री कृष्ण जन्माष्टमी	14 अगस्त	मंगलवार

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

केरल में क्यों जरूरी है वैदिक शंखनाद?

दक्षिण भारत का एक प्रदेश केरल जो प्राकृतिक सुषमा के साथ देवताओं की भूमि के रूप में जाना जाता है आज वह केरल धर्मान्तरण की भूमि बन चुका है। सम्पूर्ण भारत के किसी भी कोने में जाकर देख लीजिए। केरल से निकली ईसाई नन आपको ईसाई धर्मान्तरण करती दिख जाएगी। पिछले वर्ष सोशल मीडिया पर एक खबर चली थी कि केरल के स्कूलों में नर्सरी क्लास में पढ़ाया जाता है 'एक हिन्दू था जो बेहद गरीब था। वह कई मन्दिरों में गया लेकिन हिन्दू भगवान ने उसकी फरियाद नहीं सुनी। फिर वह चर्च गया तो ईसा मसीह ने उसे तुरन्त अमीर बना दिया और फिर वह ईसाई बन गया!' खबर में यदि जरा भी सत्यता है तो सोचिये! ईसाई मिशनरीज इन छोटे–छोटे बच्चों के मन–मस्तिष्क में कितना जहर भर रहे हैं? हालांकि केरल के अन्दर बच्चों के कोमल निश्छल मन में अपने धर्म के प्रति दुर्भावना भरने का यह खेल नया नहीं है। फिलहाल केरल में जनसंख्या संतुलन की नजर से देखें तो लगभग ३० फीसदी ईसाई, लगभग ३० फीसदी मुस्लिम और १० फीसदी हिन्दू हैं, बाकी के ३० फीसदी किसी धर्म के नहीं हैं यानी वामपंथी हैं जिन्हें धार्मिक आंकड़ों में हिन्दुओं में जोड़ा जाता है लेकिन उन्हें जब मौका मिलता है, जिधर फायदा होता उधर खिसक जाते हैं चाहे चुनावों में मदनी जैसों का साथ देना हो अथवा चर्च से चन्दा ग्रहण करना हो। वह कोई मौका हाथ से नहीं जाने देते। समूचे भारत की तरह ही समूचे केरल में भी हिन्दू बिखरे हुए और असंगठित हैं, उनके पास चुनाव में वोट देने क अलावा और कोई विकल्प नहीं है, न ही नीति–निर्माण में उनकी कोई बात सुनी जाती है, न ही उनकी समस्याओं के निराकरण में! केरल में हिन्दुओं की कोई "राजनैतिक और धार्मिक ताकत" नहीं है, एक तरफ इस्लामियत तो दूसरी तरफ ईसाईयत बीच में हिन्दू समुदाय इसके बाद अगर कुछ बचता है तो 'मार्क्सवादी सेकुलर' हिन्दुओं के हितों और धार्मिक अनुष्ठानों पर तंज कसते दिखाई देते हैं। हो सकता है जल्दी ही कश्मीर की तरह केरल भी उसी रास्ते पर चला जाये जहाँ हिन्दुओं की कोई सुनवाई नहीं होगी तो यहाँ इस्लाम से जुड़ी बातों पर प्रवचन देने वाले लोगों की बहुत पूछ है। उनके बड़े–बड़े पोस्टर और कटआउट सड़कों और चौराहों पर उसी तरह से लगे हुए होते हैं जैसे फिल्मी सितारों के लगे होते हैं। कुछ–कुछ दिनों में धार्मिक सम्मेलन आयोजित कराए जाते हैं जिनमें अरब देशों से लौटे लोग भाषण देते हैं। मस्जिद के ऊँची मीनार हो या दुकानों के अरबी शैली में लिखे नाम या फिर सड़क पर चलती बुर्कानशीं औरतें, माहौल किसी अरब देश जैसा लगता है। दिल्ली एन.सी.आर. तक सिमटी मीडिया यहाँ बैठकर गधे और पिल्लों पर बहस करा देती है लेकिन केरल आदि प्रदेशों में हिन्दू आदिवासियों को ईसाई बनाने के लिए निवेशित धनराशि और खुलेआम होते धर्मान्तरण पर मौन है। हरिद्वार से लेकर काशी तक बड़े–बड़े आश्रमों में बैठे मठाधीश अपनी ऐशोआराम की जिन्दगी में लीन हैं। इन सबकी विवशता हो सकती है लेकिन राष्ट्र और धर्म की रक्षा के लिए आर्य समाज न विवश था और न ही विवश है और न ही विवश रहेगा। यूँ तो आर्य समाज के १४० साल के इतिहास में एक से एक बड़े आयोजन कार्यक्रम हुए लेकिन दक्षिण भारत में होने वाले इस दक्षिण भारतीय वैदिक महासम्मेलन से आर्य समाज एक अनूठी गौरवगाथा लिखने जा रहा है। सर्वविदित है कि आर्य समाज अपने जन्म से ही वैदिक धर्मरूपी वृक्ष की जड़ें सींचता आया है। इसलिए अब जनजातीय समुदाय में शिक्षा का प्रचार–प्रसार कर रहा है। उस समुदाय में जहाँ से अन्य समुदाय की मिशनरीज को धर्मान्तरण के सबसे अधिक मौके मिलते हैं। मध्यप्रदेश, असम, नागालैंड समेत कई राज्यों के बाद आर्य समाज के परम अनुगामी महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त, दानवीर महाशय धर्मपाल जी सहायता से "महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च फाउन्डेशन" खोला जा रहा है ताकि धार्मिक असंतुलन से झूझते केरल जैसे प्रान्त से ईसाइयत और दारुल हरम बनाने की साजिश को नाकाम कर वैदिक सन्देश देने के लिए विश्व भर के लिए सत्य सनातन वैदिक धर्म की रक्षा के लिए आचार्य विद्वान पैदा किये जा सकें। उल्लेखनीय है कि केरल में इस वेद रिसर्च संस्थान में वेदों को उनकी यथार्थता एवं पवित्रता के अनुरूप बिना किसी 'शब्द' व 'स्वर' की त्रुटि के पारम्परिक रूप से पढ़ाने एवं संरक्षित करने के उद्देश्य से पूरी पवित्रता के साथ वेदों के संरक्षण की इस सनातन व अनूठी प्राचीन परम्परा से संस्कृत, मलयालम, अंग्रेजी आदि भाषाओं के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है। वैदिक शिक्षा, वैदिक तकनीक, वैदिक विज्ञान, वैदिक समाज, योग, ध्यान आदि विषयों पर शोधपूर्ण कार्य के लिए इस संस्थान का निर्माण किया जा रहा है। वेद भारत की धरोहर है, दुर्भाग्यवश आज वैदिक ज्ञान, वैदिक शिक्षा, वैदिक तकनीक आदि की उपेक्षा भारत में ही हो रही है, जबकि विदेशों में वेद पर शोध हो रहे हैं आर्य समाज के इस प्रयोग से जो संस्कृति और विचार लेकर युवा बाहर निकलेंगे निश्चित रूप से वही इस विश्व को शासित करेंगे, यह हमारा विश्वास है। **राजीव चौधरी**

कबिरा खड़ा बजार में

सफाई तो चाहिए, और सफाई कर्मचारी

मोदी की सरकार बनने के बाद से ही पूरे देश में स्वच्छता अभियान एक मिशन बन गया है। हर छोटा बड़ा नेता झाड़ू पकड़कर या सफाई करता हुआ अपनी फोटो खिचाना चाहता है। लेकिन सरकारें इन कर्मचारियों की ओर से पूरी तरह बेपरवाह है। जो वास्तव में गंदगी साफ करते हैं। साफ करते करते अपना जीवन तक लगा देते हैं। चार सफाई कर्मचारियों ने अपना जीवन गंदगी में ही शुरू किया था, गंदगी साफ करते हुए ही बिताया और आखिर में उनकी मौत भी उसी गंदगी में हो गई। राष्ट्रपति चुनाव, चीन को सबक सिखाने, पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब देने, अमरनाथ यात्रा की खबरों में मशगूल देश के अधिकतर लोगों को इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि यहां किसकी मौत की बात हो रही है। इतने बड़े देश में लोग आए दिन मरते रहते हैं। कोई स्वाभाविक तौर पर मरता है, कोई दुर्घटना में मारा जाता है। सरहद पर मौत हुई तो शहीद कहलाते हैं। लेकिन उन मौतों को किस श्रेणी में रखा जाए, जो गंदगी साफ करते हुए होती है। इसे प्राकृतिक तो नहीं कहा जा सकता। देश सेवा तो बिल्कुल नहीं, क्योंकि जो मरे, वे कोई स्वच्छता अभियान के सिपाही तो थे नहीं, वे तो मामूली सफाई कर्मचारी थे ! इसे कुछ लोग दुर्घटना की कोटि में रख सकते हैं। लेकिन तब तो दुर्घटना के लिए जिम्मेदार वह होगा, जिसने लापरवाही बरती हो। भारत में ऐसी लापरवाही आम बात हो गई है, क्योंकि सफाई कर्मचारियों की जिंदगी और मौत जिस बजबजाती गंदगी के बीच घटती है, उस ओर बहुत से लोग नाक–भौं सिकोड़कर भी देख नहीं पाते। देश की राजधानी दिल्ली के दक्षिण में घिटोरनी इलाके में एक हार्वेस्टिंग टैंक की सफाई के दौरान दम घुटने से उपरोक्त चार सफाई कर्मचारियों की मौत हो गई। सफाई कर्मचारियों के संगठनों का कहना है कि दर्जनों सफाई कर्मचारी सुरक्षा उपकरणों के अभाव में अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। अफसोस इस बात का है कि इन लोगों के जीवन से आम समाज को कोई मतलब नहीं रहता और इनकी मौत से भी किसी के चेहरे पर शिकन नहीं पड़ती। जबकि ये सफाई कर्मचारी अगर एक दिन भी अपना काम छोड़ दें तो सारे समाज की त्यौरी चढ़ जाती है। पिछले साल दिल्ली नगर निगम के सफाई कर्मचारियों ने वेतन की मांग पर कुछ दिनों तक हड़ताल की थी, तो सारा शहर कूड़े के ढेर में तब्दील हो रहा था। किसी तरह उनकी हड़ताल खत्म हुई और वे काम पर लौटे तो शानदार रिहाइशों में रहने वालों को राहत मिली। लेकिन उसके बाद समाज का वही आत्मकेन्द्रित रवैया सामने आ गया। सुरक्षा उपकरणों के बिना सफाई कर्मचारियों को मेनहोल में उतारना अपराध है और इसके लिए संबंधित कर्मचारियों पर कार्रवाई हो सकती है। नारायण दास के मुताबिक बिना सुरक्षा उपकरणों के मेनहोल या सेटी टैंक सफाई के दौरान किसी कर्मचारी की मौत होती है, तो सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुसार उनके परिजनों को १० लाख रुपये हजार्ना देना पड़ता है, लेकिन ज्यादातर मामलों में एमसीडी अफसर ऐसा नहीं करते। हादसे के बाद वे दोष इन कर्मचारियों पर या ठेकेदार पर डाल देते हैं, ताकि हजार्ने से बचा जा सके। कई देशों में सफाई कर्मचारियों के बजाय सीवर इंस्पेक्शन कैमरे और टूल्स से सफाई की जाती है। मेनहोल ब्लॉकेज के दौरान सीवर इंस्पेक्शन कैमरे को मेनहोल में उतारा जाता है, ताकि यह पता चल सके कि मेनहोल में कितनी दूरी पर ब्लॉकेज है। यह बेहद आसान प्रक्रिया है, लेकिन इसमें पैसे अधिक खर्च होते हैं, शायद इसी वजह से भारत के नगरीय निकायों में इसे नहीं अपनाया जा रहा है। अब यह विचारणीय है कि लोगों की जिंदगी की कीमत अधिक है या सफाई की नयी प्रणालियों को अपनाने की।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 02 अगस्त से 08 अगस्त 2017 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।